ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-श्रावण-भाद्रपद, संवत् 2071
अगस्त 2014

अंक 109, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

मोदी सर्वत्र मोदते

भ्रष्टाः पराजिताः सर्वे जातिवादः पराजितः ।
अल्पसंख्यकवर्गाणां तुष्टिवादः पराजितः ॥

उत्कोच-संस्कृतिर्नष्टा कुव्यवस्था पराजिता ।
सत्ता-केन्द्र द्वयं नष्टम् इति मन्यामहे वयम् ॥

सामान्येऽपि कुले जातः सामान्यः कर्मणा जनः ।
महतीं पदवीं देशे प्राप्तुं शक्नोति निश्चितम् ॥

बसपाया गजस्तावत् प्रविश्य पाङ्कजे वने ।
पङ्के निमग्नतां प्राप्य सहसैव दिवंगतः ॥

सपा-द्विचक्रिकाऽऽरूढाः सर्वे प्रत्याशिनस्तथा ।
पङ्के तथैव संलग्नाः नूनं निश्चलतां गताः ॥

पराजयस्य यः पङ्को मुखे गाढं समाश्रितः ।
तस्य प्रक्षालने हस्ताः व्यस्ताः कांग्रेसकर्मिणाम् ॥

नराणामिह सर्वेषां प्रियः सात्त्विक-शासकः ।
इन्द्रत्वं सहसा प्राप्य 'नरेन्द्र' समवर्त्तत ॥

संस्कृतेर्भारतीयायाः पोषको राष्ट्रचिन्तकः ।
कांग्रेस-शासनं देशे ध्वस्तीकृत्य समुत्थितः ॥

वंशवादः स्वतो ध्वस्तः महानिर्वाचनेऽधुना ।
उत्साहस्य नवः सूयो राजनीतौ समुत्थितः ॥

भाजपा-विजयं दृष्ट्वा हृष्यन्ति राष्ट्र-चिन्तकाः ।
शत्रवश्चिन्तिताः किन्तु किमाश्चर्यमतः परम् ॥

वयं मोदामहे सर्वे राष्ट्रोत्थानसमुत्सुकाः ।
महानिर्वाचनस्याऽस्य परिणामेन सर्वथा ॥

राजस्थाने महाराष्ट्रे दिल्लीप्रान्तेऽथ गुर्जरे ।
बिहारे मध्यदेशे वा मोदी सर्वत्र मोदते ॥

धर्माणां निरपेक्षताऽस्ति खलु या छद्मा सदा भारते,
सा ध्वस्ता ननु सम्प्रदाय-बहुला सौजन्यता राजताम् ॥

सद्वृत्तिस्त्वपराजिता भवतु सा नष्टा त्वकर्मण्यता,
मोदी संस्कृतिरक्षको विजयताम् इत्येवमाशास्महे ॥

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, रायबरेली
(साहित्य अकादमी पुरस्कृतः)

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७१
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द - १९१

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०१३३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १०, अंक २ ओ३म् मास/सन् - अगस्त - २०१४

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : प्रजावद् ब्रह्म	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आखिर कब लेंगे प्रेरणा हम पर्वों से	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	संसद की दीवारों के संदेश	प्रो. उमाकान्त उपाध्याय	०८
४.	कृष्ण जन्माष्टमी ! तुम्हारा स्वागत है।	श्रीमती विमला श्रीवास्तव	१०
५.	स्वदेशी से स्वालम्बी गाँव	श्री संदीप भाऊ	१२
६.	ऋषि दयानन्द के उदयपुर प्रवास का वर्णन	ड. भवानीलाल भारतीय	१४
७.	स्वामी समर्पणानन्द – व्यक्ति नहीं विचार	स्वामी विवेकानन्द	१७
८.	सांस्कारिक पृष्ठ भूमि से अभिनव समाज	अर्जुनदेव चड्ढा	१९
९.	महर्षि का वास्तविक जीवन-दर्शन	खुशहालचन्द्र आर्य	२०
१०.	कैंची की तरह काटना नहीं, सुई की तरह सीना सीखो.	कन्हैयालाल आर्य	२२
११.	छत्तीसगढ़ के वैदिक मिशनरी – स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती	डॉ. कमलनारायण आर्य	२४
१२.	पाती परदेस की	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	२५
१३.	इस्लामिक देश मलेशिया में वेदप्रचार	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	२६
१४.	होमियोपैथी के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	२८
१५.	समाचार दर्पण		२९

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाउन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

प्रजावद् ब्रह्म

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

ब्रह्म प्रजावदाभर, जातवेदो विचर्षणे।
अग्ने यद् दीदयद् दिवि॥ ऋग्. ६.१६.३६

ऋषिः **बार्हस्पत्यः भरद्वाजः** । देवता **अग्निः** । छन्दः **वर्धमाना गायत्री** ।

● **(विचर्षणे)** हे द्रष्टा, **(जातवेदः)** ज्ञान को उत्पन्न करने वाले **(अग्ने)** अग्रणी परमात्मन्! (आप हमें) **(प्रजावत्)** सन्तति-युक्त **(ब्रह्म)** अध्यात्म-ज्ञान **(आभर)** प्रदान कीजिए **(यत्)** जो **(दिवि)** (हमारे) आत्मा में **(दीदयत्)** प्रखर प्रकाश के साथ चमके।

● **हे** अग्निस्वरुप परमात्मन् ! आप विचर्षणि हैं, द्रष्टा हैं । आपका ज्ञान प्रत्यक्ष पर आश्रित है, अतएव यथार्थ एवं निर्भ्रान्त है । आप 'जातवेदाः' हैं, हृदयों में ज्ञान को उत्पन्न करने वाले हैं । जब हम बेबस हो अज्ञानान्धकार में टटोल रहे होते हैं, उस समय हमारे हृदय में ज्ञान की विद्युत आप ही चमकते हैं । हम मानवों को वेदज्ञान से अनुगृहीत करने वाले भी आप ही हैं । इस समय हमारा आत्मा अध्यात्म-ज्ञान-शून्य हो भौतिक विज्ञान की चकाचौंध से आकृष्ट हो उसी की उपासना में संलग्न हैं । पर भौतिक विज्ञान ने अपनी चरम सीमा पर पहुंचकर अपने खोखलेपन को सिद्ध कर दिया है, क्योंकि उसमें दुःख से कराह रहे मानव को शान्ति नहीं मिल रही है, अपितु वह कराहट और बेचैनी को बढ़ाने में ही सहायक हो रहा है । अतः भौतिक विज्ञान की तीक्ष्ण मार से संत्रस्त हो हम अध्यात्म-ज्ञान के पिपासु हो गये हैं, जिस अध्यात्म-ज्ञान को यहां वेद ने 'ब्रह्म' शब्द से अभिहित किया है, क्योंकि वह वृहत् है, महान है, सारवान् ।

हे ज्ञानवित् परमेश्वर ! आप हमें वह दिव्य अध्यात्म-ज्ञान प्रदान कीजिए, जिसके सम्मुख सब सांसारिक ज्ञान फीके पड़ जाते हैं । हम यह भी चाहते हैं कि वह ज्ञान 'प्रजावत्' हो, समाप्त हो जाने वाला नहीं, किन्तु नित्य अपनी नवीन-नवीन सन्ततियों को उत्पन्न करने वाला हो अर्थात् निरन्तर वृद्धिशील हो । साथ ही वह विविध दिव्य-गुण-रूप सन्ततियों को जन्म देने वाला हो । वह हमारे आत्म-लोक में प्रखर प्रकाश के साथ चमके, दामिनी-सा दमके, जिसकी ज्योति में हम कर्त्तव्याकर्तव्य के सब संशयों से मुक्त हो जायें, जिसे पाकर हम पूर्णतः तुमसे लवलीन हो जायें ।

संस्कृतार्थ :- १. विचर्षणः द्रष्टा (निघं ३.११) २. आभर आहर । हञ् हरणे, ह् को भू । ३. दीदयति ज्वलति (निघं ११६)। ४. ब्रह्म परिवृढं सर्वतः (निरु. १.७) । वृहि वृदौ, मनिन् ।

सम्पादकीय

आखिर कब लेंगे प्रेरणा हम पर्वों से ?

सहृदय पाठकवृन्द,

अगस्त का माह अनेक अर्थों में भारतीय समाज के लिए अतिशय महत्वशाली है । इसी माह में ६८ वर्ष पहले मातृभूमि के पैरों में सैकड़ों साल से जकड़ी दासता की बेड़ी को माँ भारती के रणबांकुरों ने काट–काट कर फेंक दिया था । जो सदियों से मातृभूमि के माथे पर कलंकित टीका की प्रतीक लगी रही थी । इसके लिए कैसी–कैसी कुर्बानियाँ हमारे वीरों को देनी पड़ी थी, जिनके सुनने मात्र से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । कितनी माताओं की गोद सूनी हो गयी, कितने पिताओं के लाल छिन गये, कितनी बहनों की मांगें पूंछ गयी । आजादी के दीवानों को ऐसी–ऐसी यातनाएं जेलों में सहनी पड़ी जिसका वर्णन ही कष्टकारी है । हजारों नहीं लाखों बलिदानों के बाद देश आजाद हो पाया था । १५ अगस्त १९४७ को हमने प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया था । गुलाबी के दिनों में आजादी के परवाने बड़े शौक से गुनगुनाया करते थे–

ईलाही वह भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे ।
अपनी ही जमीं होगी, और अपना आसमाँ होगा ।।

आजादी मिली क्या हुआ ? कहीं फुटपाथ पर चिथड़ों में लिपटा टुकड़ों के लिये टक–टकी लगाता बचपना है तो कहीं वातानकूलित भवनों में डनलप के गद्दे पर मलाई मार रहे कुत्तों के पिल्ले हैं । वही ऊँच–नीच, बड़ा–छोटा, सवर्ण–असवर्ण, अमीर–गरीब न जाने ऐसे कितने ही सवालात हैं जो मुंह बाये खड़े आजादी को जिसे हमने खून के बदले पायी थी चिढ़ा रहे हैं । आजादी का आलम यह है कि यहाँ रोजमर्रा की मिट्टी तेल, शक्कर जैसी चीजों के लिए भी मीलों लंबी लाइन लगानी पड़ती है । यह कैसी विडम्बना है! एक बड़ी बात और है इस देश में एक संविधान का न होना भी राष्ट्रीय एकता के गाल पर करारा तमाचा है । कहीं वर्ग विशेष को कुछ विशेष सुविधायें प्रदान कर अन्य वर्ग को उससे वञ्चित रखना यह कहां का इंसाफ है । अल्पसंख्यकवाद का राग अलापकर जो व्यवस्थायें दी जाती है वह भी अंततः एक विभाजक सीमा रेखा का ही काम करती है। मुस्लिम, ईसाई, सिख ये तीनों सम्प्रदाय इस देश में अल्पसंख्यक माने जाते हैं । इस्लामिक विचार में कितनी कट्टरता व धार्मिक असहिष्णुता है यह अब लिखने की बात नहीं रही । इस्लामी सिद्धान्तों पर मुसलमान कितने अडिग है इसी बात से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि वह मजहब के नाम पर टूट तो सकता है लेकिन झुक नहीं सकता । उससे भिन्न मतों की आस्थाओं पर प्रहार का कोई भी अवसर अपने हाथ से न जाने देने वाला यह मुस्लिम संगठन की ही करामात रही कि यहाँ द्विराष्ट्रवाद के नाम पर भारत माँ के जिगर को दो टुकड़ों में बांटकर जश्न मनाया गया । ***अभी दिल्ली में शिवसेना सांसद् द्वारा खराब रोटी बनाने वाले रसोईया के मुँह पर ठूंसने की कोशिश की तो यहां भयंकर बवाल मचाया गया कि रमजान के मौके पर धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाई जा रही है, किन्तु इसी रमजान पर चार दिन पहले बैंगलोर में एक मुस्लिम शिक्षक द्वारा विद्यालय के अन्दर नाबालिग हिन्दू बालिका से बलात्कार किया गया, उस समय तो रमजान की पवित्रता पर आँच नहीं आई । अलगाव वाद की रोटियाँ सेंकने वाले वे तथाकथित नेता उस समय क्या समाधि लगाकर बैठे थे ? खैर !*** जेहाद

के जहर से आज पूरा विश्व आतंकित है। हर रोज अखबार के मुख्य पृष्ठ खून से सने नजर आते हैं। कई राज्यों के लिए सिरदर्द बना नक्सलवाद के तार भी ऐसी ही ताकतों से जुड़े हैं। समय रहते इन विषमतावादी ताकतों पर यदि आवश्यक लगाम न कसी जाय तो फिर हाथ मलकर पछताने के सिवाय कोई चारा नहीं रह जाएगा। दूसरी ओर ये ईसाई समाज है जो क्रान्ति से नहीं शान्ति से भारतीय संस्कृति को घून की तरह चाटकर इसके नामों निशां मिटाने की तैयारी कर रहा है। धर्मान्तरण उसका सबसे बड़ा हथियार है जिसका इस्तेमाल वह भारत के गरीब मजबूर बेसहारा निरीह जनता पर सेवा शिक्षा एवं नौकरी के बहाने निरन्तर करता आ रहा है। पेट्रो डालर के बल पर ईसा एवं मूसा के भेड़ों में संख्या वृद्धि करना ही इसका एक सूत्रीय कार्यक्रम है। सेवा के पर्याय रही सुविख्यात मदर टेरेसा कोलकाता में केन्द्र बनाकर गरीब रोगियों व सड़कों पर पड़े मरणासन्न लोगों की सेवा में समर्पित उसकी छवि से सभी परिचित हैं जिसे भारत सरकार ने नोबल पुरस्कार से भी नवाजा था, इतना बड़ा सम्मान, किन्तु सेवा की आड़ लेकर खेले जाने वाले उसके घिनौने खेल से बहुत कम लोग परिचित रहे हैं विश्व प्रसिद्ध चिकित्सा पत्रिका "लान्सेट" के सम्पादक डॉ. राबिन काक्स ने लिखा था – कि उनके अस्पताल अत्यन्त अस्वास्थ्यकर रहे हैं। कोलकाता के गरीबों और रोगियों के लिए दुनियाँ से मिले दान की एक कौड़ी भी वहां खर्च नहीं होती थी। एनासिन व एस्प्रिन जैसी दवा के अलावा वहाँ कुछ नहीं था। मजे की बात तो यह है कि मदर टेरेसा के मरने के बाद न्यूयार्क के ब्रांक्स स्थित एक बैंक में उनके नाम से २ अरब १५ करोड़ जमा पाये गये। इनमें से कुछ भी कोलकाता के गरीबों पर खर्च नहीं हुआ था। जबकि उन्हीं के नाम पर दान स्वरुप यह एकत्र किया गया था।

अभी–अभी पिछले कार्यकाल में राजस्थान की वसुंधरा राजे सरकार ने एक ईसाई संगठन का पंजीयन रद्द किया है। जिसने सेवा की आड़ लेकर ४०० बच्चों वाले आश्रम के नाम पर १४०० बच्चों के जाली रिकार्ड से पिछले केवल 1 साल के अन्दर ही विदेशों से ७ करोड़ रुपये दान स्वरुप लेकर धर्मान्तरण का जाल फैलाकर मेरे राम कृष्ण और दयानन्द की पावन संस्कृति को तहस–नहस करने का बीड़ा उठाया हुआ था। इसी प्रकार की न जाने कितनी ही घटनाएँ हमें सचेत कर रही हैं कि स्वतंत्रता की सुरक्षा में सेंध मारने वाली इन शक्तियों को नेस्त–नाबुद कर खुशहाल भारत के निर्माण में जुट जाने का वक्त अब आ गया है। चारों ओर से हमारी स्वतंत्रता पर प्रहार के ऊपर प्रहार हो रहे हैं कहां–कहां देखें इधर देश के अन्दर शिक्षा के नाम पर संस्कृति का गला घोंटकर अपने नन्हों को जहर पिलाया जा रहा है। उनके दिल और दिमाग को मानो दूषित करने की कसम ही खा रखी है, तो दूसरी ओर चैनलों के माध्यम से पश्चिम की भ्रष्ट संस्कृति परोसकर युवाशक्ति को नपुंसक बनाया जा रहा है। समय रहते यदि जागृति न लायी गयी तो पश्चाताप के अलावा और कोई मार्ग नहीं बचेगा।

भगवान श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी भी आगामी १८ अगस्त को आने वाली है। इस अवसर पर आसुरी शक्ति को विध्वंसकर धर्म की स्थापना करने वाले चक्रसुदर्शनधारी योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण को याद कर भारतीय समाज ऊर्जा एवं स्फूर्ति का अनुभव कर लेता है। आइये, महाभारत के झरोखे से नीति निपुण श्रीकृष्ण पर थोड़ा दृष्टिपात करें। श्रीकृष्ण जी महात्मा, धर्मात्मा, धर्मरक्षक, दुष्टनाशक, परोपकारी, सदाचारी श्रेष्ठ पुरुष थे। आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व कौरव पाण्डव के समय में वे हुए थे। उस समय के महर्षि वेद व्यास रचित ग्रन्थ, 'महाभारत' में श्रीकृष्ण जी का बड़ा ही पवित्र जीवन चरित्र मिलता है। बहुत बाद में किसी धूर्त्त, स्वार्थी व्याभिचारी व्यक्ति ने 'भागवत पुराण' नाम से पुस्तक लिख दी जिसमें उसने श्रीकृष्ण जी के जीवन के साथ बहुत सी गलत बातें जोड़ दी–सम्भवतः उसने अपने दोषों को ढांपने के लिए

ऐसा किया। महर्षि दयानन्द के शब्दों में 'सत्यार्थ प्रकाश' से– "देखो ! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा और मिथ्या दोष श्रीकृष्ण में लगाए हैं। इसको पढ़ पढ़ा, सुन सुना के अन्य मतवाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों कर होती।" महाभारत के अनुसार श्रीकृष्ण जी की एक पत्नी थी, रुक्मिणी। वे बहुत उच्च कोटि के संयमी थे। उत्तम सन्तान की इच्छा से विवाह के पश्चात् वे तथा उनकी पत्नी रुक्मिणी बारह वर्ष तक ब्रह्मचारी रहे थे। उसके पश्चात् उन्हें जो पुत्र प्राप्त हुआ प्रद्युम्न वह तेज और बल में श्रीकृष्ण जी के समान था। श्रीकृष्ण जी ने प्रजा हित में दुष्ट, अन्यायकारी, स्वेच्छाचारी राजा कंस का वध कर, उसके धर्मात्मा, प्रजापालक पिता उग्रसेन को मथुरा का शासक बनाया। जरासंघ जिसने एक सौ के करीब धर्मात्मा, सदाचारी, परोपकारी राजाओं को बन्दी बना रखा था, को पाण्डवों की सहायता से समाप्त कर उन राजाओं को मुक्त करवाया। श्री कृष्णजी की नीतिमत्ता तथा सूझबूझ से ही कम शक्ति के होते हुए भी पाण्डवों को कौरवों पर विजय प्राप्त हुई थी। यदुकुल तिलक योगेश्वर के जन्माष्टमी के अवसर पर नीति निपुण श्री कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर संगठित समाज संरचना में यदि हमारे प्रयास प्रगतिशील बन सके तभी जयंती मनाना सार्थक हो सकेगा।

इसी माह में **श्रावण पूर्णिमा** भी पड़ रही है। जिसे भारतीय समाज रक्षाबन्धन के रूप में मध्यकाल से भाई–बहन के बीच स्नेह के प्रतीक के रूप में बड़ी धूमधाम से सर्वत्र मनाकर मधुरसंबंधों को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है। यह रक्षाबंधन की परम्परा प्रथमतया मुस्लिम युग में ही इस देश में शुरू हुई। हुमायूँ कर्मावती की घटना से आप भलीभांति परिचित ही है। यह इस पर्व का आधुनिक रूप है। वस्तुतः यह पर्व प्राचीन भारत में चातुर्मास्य परम्परा के निर्वाहार्थ ही आरम्भ हुआ था। श्रवणा नक्षत्र पर पड़ने वाले इस पर्व के नाम से ही यह प्रतिध्वनित होता है कि सुनने–सुनाने का यह पर्व है। भारत एक कृषि प्रधान देश होने के कारण इस समय (सावनपूर्णमासी) तक लगभग कृषक वर्ग खेती के जरूरी कामों को निपटा लेता था, जिससे चातुर्मास्य में निश्चिन्त सत्संग स्वाध्याय का क्रम चलता रहता था। वनों में रहने वाले ऋषि मुनि भी अपनी कुटियों को त्याग कर इस अवसर पर गांवों में आकर जनता के बीच धर्मचर्चा के माध्यम से लोगों को लाभान्वित करते थे। इसी पावन परिपाटी के तहत ही आर्यसमाज में भी वेदप्रचार सप्ताह के रूप में इस परम्परा को जीवित रखा गया है। इस अवसर पर सम्पूर्ण विश्व में जहां–जहां आर्यसमाज का संगठन है सर्वत्र स्थानीय तौर पर अपनी सामर्थ्य शक्ति के अनुरूप वेद प्रचार की योजनायें संगठन द्वारा संचालित की जाती है – कहीं पर साप्ताहिक प्रचार योजना तो कहीं पाक्षिक एवं कहीं मासिक अभियान इस उद्देश्य हेतु किया जाता है।

महर्षि दयानन्द जी के पुण्य प्रताप से इतना बड़ा कर्त्तव्य का दर्शन हमें मिला है कि हम इसका महत्व नहीं समझ पा रहे हैं। इस विकराल काल में जानने समझने के बावजूद भी यदि हम पिछड़ गये इतिहास हमें कभी क्षमा नहीं करेगा। इस समय समस्या अस्तित्व संकट का है यदि हमने मजबूती से उपस्थिति दर्ज नहीं की तो फिर देव दयानन्द के सपनें केवल सपने बनकर रह जाएंगे। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का वैदिक संदेश** अपने हृदय में धारण कर जो जहां जैसे परिस्थिति में हो निरन्तर आगे बढ़ने का संकल्प कैसे पूरा हो इस पर हमें गंभीरता से सोचना होगा।

– आचार्य कर्मवीर

प्रेरणात्मक

संसद की दीवारों के संदेश

- प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार संसद में प्रवेश करते समय संसद की सीढ़ियों पर सिर रखकर प्रणाम किया। इससे संसद की गरिमा बहुत बढ़ गयी है। आशा है कि सांसद महानुभाव इस भावना और गरिमा का सम्मान करेंगे। संसद भवन की दीवारों और लिफ्टों के गुम्बजों पर लिखे हुये संदेश संसद के सदस्यों, सांसदों से कुछ उम्मीद करते हैं। संसद के इन संदेशों का चयन करने वाले पूर्व राजनयिकों के प्रति मन में श्रद्धा के भाव जग उठते हैं। आज के बहुसंख्यक सांसदों के पतनशील आचरण, स्वार्थी व्यवहारों पर विचार करने से इन आदर्श संदेशों का महत्व बहुत बढ़ जाता है। संसद भवन के प्रथम द्वार से होकर जब हम केन्द्रीय सभागार के प्रांगण की ओर चलते हैं तो प्रवेश द्वार पर भारतीय संस्कृति का एक उदात्त आदर्श निम्न श्लोक में लिखा हुआ मिलता है - **"अयं निजः परो वेत्ति गणना लघुचेतसाम् उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।"** (पंचतंत्रम्) इसका अर्थ हुआ कि यह अपना है और वह पराया है ऐसा विचार छोटे चित्त वालों का होता है। जो उदार चरित्रवाले होते हैं वे तो सारे विश्व को अपना परिवार समझते हैं। आज के भूमण्डलीकरण और विश्व के बाजारीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विश्व के संसाधनों की लूट के युग में ऐसे आदर्शों का महत्व बढ़ जाता है।

लोकसभा सुविशाल सभागार में लोकसभा के अध्यक्ष के पीठ के पीछे दीवार पर बौद्ध युग की प्रसिद्ध सूक्ति- **"धर्म चक्र - प्रवर्तनाय"** लिखा हुआ है इसका अर्थ हुआ कि सांसदों को धर्म चक्र के निर्माण के लिये प्रयत्नशील बने रहना चाहिए। इस सूक्ति को देखते हुए हम संसद के सदस्यों को पंथ निरपेक्ष होने की सलाह तो सोच सकते हैं। इससे यह सुस्पष्ट है कि हमारे संसद का आदर्श धर्म निरपेक्ष नहीं है, बल्कि सम्प्रदाय निरपेक्ष है। संसार में अनेकों पंथ है - शैव, शाक्त, वैष्णव आदि हिन्दुओं के सम्प्रदाय है, शिया, सुन्नी आदि मुसलमानों के सम्प्रदाय है, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट आदि ईसाईयों के सम्प्रदाय है, जैन, बौद्ध, पारसी, सिक्ख सभी सम्प्रदायों में ही परिगणित है। इनके प्रति संसद का निरपेक्ष समान भाव होना ही इष्ट है।

धर्म तो मानव समाज को, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को धारण पालन करता है **"धारणाद् धर्म मित्याहुः"** कहा गया है। जिस आचरण से सम्पूर्ण विश्व मनुष्य, पशु, पक्षी, प्राकृतिक संसाधन सभी धारण, पोषण हो वह धर्म कहलाता है। मनु महाराज ने कहा है - **धृतिः क्षमा देमोऽस्तेयम् शौच मिन्द्रिय निग्रहः । धीर विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्** ।। इसी के साथ अहिंसा और जोड़ देने से धर्म के ग्यारह लक्षण हो जाते हैं। राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर धर्म की व्याख्या लिखी हुयी है। अहिंसा परमो धर्मः। राष्ट्रपिता गांधी जी की सभाओं में गाया जाता था - वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे। आज के युग में हमारी संसद में जोर जबर्दस्ती से अपनी बात मनवाने का प्रयास होता है।

संसद की दीवारों पर जहाँ भी भारत का राजचिह्न अंकित है वहां सर्वत्र लिखा हुआ है - **" सत्यमेव जयते"** इसका भाव हुआ कि सांसदों का कर्त्तव्य है कि वे सत्य की जीत की चेष्टा करें। यह पूरा वाक्य है - **"सत्यमेव जयते नानृतम्** ", ऋत् का अर्थ होता है उचित अनृत का अर्थ होता है अनुचित। भाव यह हुआ कि जो सत्य अनृत है अनुचित है उसकी जीत की चेष्टा नहीं होनी चाहिए। उदाहरण के लिये स्कैण्डल होते हैं। घूस का बाजार सर्वत्र गर्म रहता है चोरी, भ्रष्टाचार होते हैं इसलिए उनकी सत्ता तो है पर वे अनुचित है। सांसदों का कर्त्तव्य है कि वे अनुचित का समर्थन न करें। आज के युग में हमारी संसद में उचित अनुचित काविचार किये बिना पार्टी और नेताओं के समर्थन में बहुत कुछ होता रहता है। कुछ दिनों पहले राष्ट्रमंडल के खेलों का स्कैण्डल, २ जी का मामला, कोलगेट का स्कैण्डल, सभी सत्य की निर्मम हत्या है। सत्यमेव जयते का संदेश इस तरह के आचरण को रोकता है।

राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है - **सत्यम् वद धर्मंचर**। यह तैत्तिरीय उपनिषद का वचन है।

इसका सुस्पष्ट संदेश है कि संसद के सदस्य सत्य बोलें और धर्म का आचरण करें। हम यह देख रहे हैं कि धर्म के आचरण की अनुशंसा अनेक बार की गयी है। राज्यसभा के एक और प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है - **"एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति"** (ऋग. १.१६४.४६) ऋग्वेद में तो यह उक्ति परमेश्वर के सम्बन्ध में है किन्तु यहां संसद में इस उल्लेख का आशय यह समझ में आता है कि देशहित, देश की सुरक्षा, देश का बहुमुखी विकास सभी सदस्यों का साझा सत्य है और सभी सदस्य मिल जुलकर आपसी समन्वय से इस सत्य को पाने का प्रयास करें। एक और प्रवेश द्वार पर भगवत् गीता का निम्न वाक्य लिखा हुआ है - **"स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः"** (गीता १८, ४५) संसद का प्रत्येक अपने अपने कर्म का, कर्त्तव्यों का पालन करते हुए संसद के उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। आज हमारे बहुदलीय प्रजातन्त्र में राजनीतिक दल स्वदेश के स्वार्थ को भुलाकर दलीय स्वार्थो में उलझ जाते हैं। कई बार तो सदस्यों के आपसी नोक-झोंक में लड़ाई हो जाती है। संसद के ये वाक्य दलीय स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय स्वार्थ की अनुशंसा कर रहे हैं -

संसद की प्रथम लिफ्ट के गुम्बद पर महाभारत का निम्न श्लोक अंकित है -

" न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मो न सो यत्र न सत्यमस्ति,
सत्यम् न तत् यत् छलमभ्युपैति ।।" (महाभारत)

अर्थात् वह सभा या संसद, संसद नहीं होती, जिसमें वृद्ध, वरिष्ठ, अनुभववृद्ध अर्थात् ज्ञानी और अनुभवी लोग न हो। वे वरिष्ठ वृद्ध जन भी नहीं है जिनके वक्तव्य राष्ट्रधर्म और राष्ट्रहित में न हो, राष्ट्र धर्म भी ऐसा हो जिसमें सत्य की रक्षा होती हो और सत्य भी ऐसा हो जिसमें छलकपट भरा न हो। इस संदेश का आशय यह है कि हमारे राष्ट्र धर्म, हमारी राजनीति जितना पारदर्शी हो, हमारे राष्ट्र धर्म में जितना छल-कपट कम होगा उतना ही हमारे राष्ट्र और हमारी संसद की गरिमा बढ़ेगी। लिफ्ट क्रमांक दो के गुम्बद पर मनुस्मृति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है -

"सभा वा न प्रवेष्टव्या, वक्तव्यम् वा समञ्जसम्।
अब्रूवन्, विब्रूवन् वापि नरो भवति किल्विषी ।।" (मनु.८.१३)

यह आदेश सभासदों को उनके आचरण की गरिमा के प्रति सतर्क करता है। इस श्लोक का भावार्थ यह है कि सभासद सभा में प्रवेश न करें, यह तो उनकी इच्छा पर है (हम यह समझते हैं कि जब कोई संसद का सदस्य बन जाता है तो वह संसद में प्रवेश कर चुका, उसे अनुपस्थित होने का अधिकार नहीं है) सभासद जब संसद के सदस्य बन चुके तो उन्हें राष्ट्र धर्म के अनुकूल ही बोलना चाहिए। जो सदस्य संसद में बोलेगा ही नहीं या झूठ बोलेगा वह पाप करेगा। हम पिछली लोकसभा के राष्ट्रमण्डलीय खेलों, २ जी के घोटाले और कोलगेट के घोटाले के प्रसंग में देख चुके हैं कि पिछली संसद में कैसे-कैसे छल हुये हैं।

लिफ्ट क्रमांक तीन पर लिखा हुआ है -

"दया मैत्री च भूतेषु दानम् च मधुरा च वाक्।
न ही दृशम् संवननं त्रिषुलोकेषु विद्यते ।।" (महा. वि.नी.)

इसका भाव यह है कि प्राणी मात्र पशु-पक्षी मनुष्य आदि सबके प्रति दया, प्राणी मात्र से मित्रता, मधुर वचन और दान देने की प्रवृत्ति (केवल धन दान नहीं या भूमिदान ही नहीं, बल्कि श्रमदान, विद्यादान आदि) संसार का दुर्लभ है। इस सूक्ति का यह आशय है कि सभासद, जनप्रतिनिधि इन मानव गुणों से अपने को परिपूर्ण बनाये रखे।

लिफ्ट क्रमांक चार पर शासक के राजधर्म पालन का मार्गदर्शन करने वाला शुक्रनीति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है -

"सर्वदा स्यान्नृपः प्राज्ञः, स्वमते न कदाचन।
सभ्याधिकारिप्रकृतिः सभासत्सुमते स्थितः ।।" (शु.नी. २.३)

इसका आशय यह है कि हमारी कार्यपालिका, प्रधानमंत्री और उनके मंत्रिमण्डल के सदस्य विद्वान् हो, किन्तु अपनी बात पर हठपूर्वक अड़े न रहे। उन्हें सभासदों के विचार और परामर्श से निर्णय लेना उचित है। संसद भवन के इन संदेशों के परिप्रेक्ष्य में हमारा हृदय उन अपने पूर्व पुरुषों की सूझ-बूझ पर श्रद्धा से भर उठता है। आज के संसद सदस्यों के अनेक बार अनुचित आचरणों से और मंत्रिमण्डलीय अनुचित निर्णयों को देखते हुये इन संदेशों का महत्व बहुत बढ़ जाता है।

पता : ईशावास्यम्, पी.-३०, कालिन्दी हाउसिंग स्टेट, कोलकाता-८९

१८ अगस्त जन्माष्टमी पर विशेष

पर्व प्रेरणा

कृष्ण जन्माष्टमी ! तुम्हारा स्वागत है।

श्रीमती विमला श्रीवास्तव

हे कृष्ण जन्माष्टमी ! तुम्हारा स्वागत है। तुम्हारे शुभागमन पर हम सब भारतीय एवं तुम्हारे श्रद्धालु भक्त तुम्हारा हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। हम तुम्हारे अत्यन्त कृतज्ञ हैं क्योंकि तुम्हारे आगमन से हमारे हृदय अपने हृदय सम्राट, कृष्ण के जन्म होने की कल्पना करके कमल की तरह खिल उठते हैं। इसके अतिरिक्त हम तुम्हारे प्रति इसलिए भी कृतज्ञ हैं क्योंकि तुम हजारों वर्षों से प्रतिवर्ष नियमित रुप से आकर हमें हमारे गोपाला, योगीराज, महान् शक्तिशाली, क्रान्तिकारी, चक्रधारी, कुशल राजनीतिज्ञ तथा सोलह कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण जी की याद दिला देती हो।

हे जन्माष्टमी ! तुम्हारे आगमन से हमें श्रीकृष्ण जी की बांसुरी की मधुरतान तथा उनकी मनमोहक मुस्कान का स्मरण हो आता है जिस कारण हम भाव विभोर होकर झूम उठते हैं और झूम-झूम कर गा उठते हैं -

"श्रीकृष्ण, गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव"।

ऐसे आनन्द की वर्षा करने वाले, श्रीकृष्ण जी की जन्म तिथि जन्माष्टमी ! तुम्हारा बारम्बार स्वागत है तथा स्वागत के साथ-साथ तुमसे हमारी एक प्रार्थना भी है कि अब जब तुम वापिस जाओ तब हमारे प्रिय श्रीकृष्ण जी तक हमारा एक सन्देश पहुंचा देना कि आपने श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के चौथे अध्याय के सातवें श्लोक में अर्जुन से कहा था -

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् "

अर्थात् हे भारत (भरत कुलोत्पन्न अर्जुन) जब-जब धर्म का ह्रास होता है तथा अधर्म का उत्थान होता है तब-तब मैं जन्म लेता हूँ।

इसके साथ ही आठवें श्लोक में कहा था -

"परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्,
धर्म संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे-युगे "।

अर्थात् सज्जनों की रक्षा के लिए, दुष्टों का विनाश करने के लिए व धर्म की स्थापना के लिए मैं युग-युग में जन्म लेता हूँ तो फिर अभी तक तुमने जन्म क्यों नहीं लिया ? क्या अधर्म की उन्नति तथा धर्मात्माओं की और दुर्दशा अभी देखनी बाकी है? साथ ही श्रीकृष्ण जी से कहना कि तुम्हारे भारत में धर्म तथा धर्मात्माओं की दुर्दशा से अधिक तुम्हारी अपनी जितनी दुर्दशा हो रही है उसे तुम स्वयं आकर देख जाओ।

हे जन्माष्टमी ! श्रीकृष्ण जी के मंदिरों को देखकर तुम उन्हें अपना आंखों देखा हाल सुनाना और बताना कि तुम्हारे मंदिरों में कैसे तुम्हारे तथा कथित भक्तजन बड़े-बड़े घन्टे घड़ियाल बजा बजा कर तुम्हारे नाम से काला बाजार चला रहे हैं। तुम्हारे श्रद्धालु तुम्हारे मंदिरों में अत्यन्त भक्ति भाव से जो चढ़ावा चढ़ाते हैं वह तुम्हारे गरीब भक्तों तक न पहुंच कर पिछले चोर दरवाजे से बाहर जाकर दुकानदारों के पास बेच दिया जाता है। जनता भूखों मर रही है परन्तु मंदिरों के व्यवस्थापक राजा महाराजाओं की तरह सोने व चांदी के छत्र धारण कर घूमते हैं और मलाई व मोहन भोग खाते हैं।

जगह-जगह तुम्हारे नाम की आड़ में वासना भड़काने वाले गीत गाये जा रहे हैं। हरे राम ! हरे कृष्ण, गा कर डिस्को नृत्य हो रहे हैं, गांजा, अफीम, ड्रग्स, तम्बाकू आदि के सेवन कर नशे में धुत लोग क्या-क्या कुकृत्य कर रहे हैं यह देख हृदय कांप उठता है। भाई-बहन तथा बेटी के बीच अनैतिक सम्बन्ध हो रहे हैं, स्त्रियों को नंगा करके बाजारों में घुमाया जा रहा है, ड्रग्स खरीदने के लिए बच्चे चोरी ही नहीं करते अपितु अपने माँ-बाप का खून भी कर रहे हैं।

हे मेरी प्यारी जन्माष्टमी ! श्रीकृष्ण जी से यह भी कहना कि तुम्हारे तथाकथित भक्त लोग तुम्हारे भक्त होने के मुखौटे लगाकर वासना के रंग में रंगे हुए नंगा नृत्य कर रहे हैं।

जहाँ वे तुम्हारे प्रति प्रेम के नाम पर तुम्हारी अभिन्न हृदया, स्नेहशीला व भक्त राधा के पवित्र आध्यात्मिक प्रेम को बदनाम कर रहे हैं वहाँ वे '**गोपिका चीर हरण**' जैसे चित्रों में राधा व गोपिकाओं के नंगे चित्र बनाकर उसमें तुम्हे युवा रुप में यमुना किनारे स्थित कदंब वृक्ष पर गोपियों के कपड़ों सहित बैठे हुए बांसुरी बजाते चित्रित कर तुम्हे भी बदनाम कर रहे हैं। वृन्दावन में राधा के साथ कामक्रीड़ा करते हुए तुम्हारे चित्र देखकर तो हमारा मस्तक लज्जा से झुक जाता है।

हे जन्माष्टमी ! तुम श्रीकृष्ण जी से यह भी पूछना कि कौरवों की भरी सभा में भीष्म पितामह धर्मराज युधिष्ठर आदि पांडवों की उपस्थिति में जब दुशासन द्रौपदी का चीर हरण कर रहा था, द्रौपदी "त्राहिमाम्" "त्राहिमाम्" कह कर रक्षा के लिए पुकार रही थी तथा कौरव लोग द्रौपदी का यह अपमान देखकर बीभत्स हँसी हँस रहे थे तब तो तुम तुरन्त भागकर द्रौपदी की रक्षा करने के लिए पहुंच गये थे परन्तु जबकि दिन दहाड़े सैकड़ों द्रौपदियो के चीर हरण हो रहे हैं तथा तुम्हारी बहु बेटियों से शरीर बेचने का धन्धा करवाया जा रहा है तब तुम चुप कैसे बैठे हो ? उनकी रक्षा करने के लिए अब तुम भागकर क्यों नहीं आते ? भोली भाली लड़कियाँ जो अपना सुखी परिवार बसाने व अपने प्यारे बच्चों की किलकारियां सुनने के लिए मन ही मन सुनहरे सपने देखा करती हैं आज वे अपने सपनों का खून हो जाने पर किस प्रकार आठ-आठ आंसू बहा रही हैं क्या उन्हें रोता देखकर तुम्हारा हृदय नहीं पसीजता? आज धरा पर जो असंख्य कंस जरासन्ध, दुर्योधन, दुशासन व धृतराष्ट्र जैसे अत्याचारी पैदा हो गये हैं और उनके अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं उन्हें समाप्त करने के लिए तुम कब चक्रधारण करोगे ?

प्रिय जन्माष्टमी ! अपने श्रीकृष्ण से कहना-"हे गोपाल! तुमने अपने जिन भक्तों के आगे गौएँ पालकर उनके दूध, दही, मक्खन का सेवन करने का जो आदर्श प्रस्तुत किया था उन्हें अब तुम्हारी गौओं का दूध अच्छा नहीं लगता उन्हें तो अब उनका मांस अच्छा लगता है। इसलिए अब प्रतिदिन लाखों गौएं काटी जा रही है, उनके मांस को सुरक्षित रखने के लिए कारखाने खोले जा रहे हैं, गर्भवती गौओं को मार कर उनके गर्भ स्थित कोमल बछड़ों के कोमल मांस से सुन्दर-सुन्दर पर्स व जूते बनाये जा रहे हैं तथा गौओं की चरबी को घी में मिलाकर खायां खिलाया जा रहा है। क्या तुम तक उन गौओं का करुण क्रन्दन अभी तक पहुंच नहीं पाया ? अश्वयमेव नहीं पहुंच पाया होगा अन्यथा यह कैसे संभव हो सकता है कि तुम उनका करुण क्रन्दन सुनकर भी अपनी प्राणप्यारी गौओं की रक्षा करने के लिए अवतरित नहीं होते। सत्य यह है कि तुम्हारे भक्त लोग न तो तुम्हें पालने (झूले) के बाहर पांव रखने देते हैं और न ही घंटो घड़ियालों के शोर में वे तुम्हे किसी का करुण क्रन्दन सुनने देते हैं।

हे जन्माष्टमी ! श्रीकृष्ण जी से यह भी स्पष्ट कह देना कि तुम्हारा नाम अगर रखने के लिए तुम्हारे भक्तों ने 'गीता मंदिर', 'राधा-कृष्ण मंदिर', 'माखन चोर मंदिर' आदि अनेकों मंदिर बना दिये हैं परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं कि तुमने श्रीमद्भगवतगीता में अर्जुन के रुप में उन्हें क्या उपदेश दिया था। तुमने तो अर्जुन को कहा था - "**मयि सर्वाणिं कर्माणि सन्यस्याध्यात्म चेतसः। निराशो निर्ममो भूत्वा युद्धस्व विगत ज्वरः**" अर्थात् अपने सब कर्मों को आध्यात्म चित्त से मेरे प्रति समर्पित करके आशा, ममता और सन्ताप रहित होकर युद्ध कर। परन्तु अब स्थिति यह है कि धर्म के रक्षकों का आचरण तुम्हारे प्रति समर्पणाभाव का स्थान अहंकार, निराशा व कामनाओं ने ले लिया है। ममता को त्यागने के स्थान पर तुम्हारे भक्त एड़ी से लेकर चोटी तक आसक्ति में डूब गये हैं। ऊंचे ऊंचे पदों पर आसीन अधिकारी गण अपने बच्चों व अपने इष्ट मित्रों के प्रति इतने मोह ग्रस्त हो गये हैं कि उन्हें अपने परिवार के अतिरिक्त अन्य कोई योग्य अधिकारी दिखाई ही नहीं देता। इस कारण तुम्हारी इस दुनिया में कंसो, जरासन्धो, दुर्योधनों, दुशासनों व धृतराष्ट्रों की संख्या निरन्तर बढ़ती चली जा रही है। अत्याचारी व अन्यायी लोग अब निशंक घूमते हैं तथा सज्जन व धर्मात्मा व्यक्ति मुंह नीचा किये आतंकित होकर जी रहे हैं। सब तरफ आर्थिक व सामाजिक शोषण हो रहा है। हिंसा चरम सीमा पर पहुंच गई है। अतः हे धर्म के रक्षक श्रीकृष्ण! अब शीघ्र भारत में पुनर्जन्म लेने की कृपा करो अन्यथा एक दिन ऐसा आयेगा जब तुम्हारा कोई नाम लेवा तक नहीं बचेगा। हे जन्माष्टमी ! मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम श्रीकृष्ण जी तक हमारा यह सन्देश अवश्य पहुंचा दोगी।- ***तुम्हारे श्रद्धालु भक्तगण***

पता - बी.-६२०, सड़क -३४, स्मृति नगर, भिलाई

अभियानात्मक स्वदेशी से स्वावलम्बी गाँव

- संदीप भाऊ

स्वदेशी का अर्थ यह है कि हम अपने आसपास के प्रदेश, वस्तु, स्त्रोतों का उपयोग, सेवा एवं जतन करें, देश की आजादी के आन्दोलन में महात्मा गांधी जी ने विदेशी वस्तु का बहिष्कार व स्वदेशी वस्तुओं का स्वीकार करना सिखाया, परन्तु आजादी के ६८ साल बाद हम इससे विपरीत पाते हैं।

विदेशी वस्तु, विचार, वस्त्र, विदेशी भाषा, भेषज, विदेशी दवा, भोजन, भजन, विदेशी खाद, कीटनाशक व तेलादि से देश के प्रतिवर्ष लगभग १५ से २० लाख करोड़ रुपये के धन की बर्बादी हो रही है। हमें स्वदेशी के रास्ते पर चल कर देश के धन, संसाधन, बचपन, यौवन व संस्कारों को बचाना है और स्वदेशी वस्तु, विचार, वस्त्र, स्वदेशी भाषा, स्वदेशी दवा व चिकित्सा, स्वदेशी गोबर आदि का खाद व पशुओं के गोमूत्रादि से बने कीटनाशकादि का प्रयोग करके तथा तेल आदि के क्षेत्र में भी देश को आत्मनिर्भर बनाकर अपनी आवश्यकताओं की तो पूर्ति हमें करनी ही है, साथ ही स्वदेशी उद्योगों के द्वारा हमें इतना उत्पादन बढ़ाना है कि हम औद्योगिकीकरण व वैश्वीकरण का लाभ उठाकर विश्व में सर्वाधिक निर्यात करने वाला देश तो बनेंगे ही साथ ही स्वदेशी से अपनी देश की बचत व विदेशों में निर्यात की बढ़त से हम देश का आर्थिक दृष्टिकोण से कम से कम २५ से ३० लाख करोड़ रुपये प्रतिवर्ष बचा पायेंगे और कुछ ही दिनों में भारत को विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रुप में खड़ा कर पायेंगे, नित्य प्रयोग की विदेशी वस्तुएं जैसें साबुन, शैम्पू, टूथपेस्ट, क्रीम, पाउडर, जूते चप्पल व वस्त्रादि का पूर्ण बहिष्कार करेंगे तथा कोल्डड्रिंक्स आदि के स्थान पर स्वदेशी नींबू पानी की शिकंजी व अन्य स्वदेशी स्वास्थ्यवर्धक पेयों को प्रोत्साहन देंगे।

स्वदेशी कम्पनियों की वस्तुओं को गांवों तक पहुंचायेंगे तथा साथ ही एक बड़ी कार्ययोजना के तहत गांव या गांव के आसपास बनी स्वदेशी वस्तुओं का ही प्रयोग करेंगे। यदि स्वदेशी उत्पादों की गुणवत्ता व मूल्य आदि में कही कोई दोष होगा तो उसको भी परस्पर सहयोग व सद्भाव से दूर करेंगे। इस प्रकार प्रत्येक गांव, जिला व पूरे भारत को हमें स्वदेशी से स्वावलम्बी अथवा आत्म निर्भर बनाना है तथा विदेशी वस्तुओं व विचारों के मिथ्याकर्षण से देश को मुक्ति दिलानी है। स्वदेशी अपनायेंगे-देश को बचायेंगे के संकल्प को पूरे देश में जागृत करना है। स्वदेशी व विदेशी कंपनियों की सूची भी हमें करोड़ों लोगों तक पहुंचानी है।

स्वदेशी चीजों में लगने वाला कच्चा माल गांव में ही उत्पादित होगा, जैसे कपड़े के लिए कपास, तेलों के लिए तेलबीज, कुछ चीजें (जैसे इलेक्ट्रानिक वस्तुयें), जिनके प्लांट डालने में ज्यादा खर्च आता हो, वह कुछ गांव मिलकर डालेंगे। इससे गांव स्वावलम्बी होगा, गांव फिर से चमकने लगेंगे। विदेशी कंपनी के जाल से मुक्त होकर भारत स्वदेशी, सहकार, स्वावलंबन अपनाते ही फिर से आर्थिक स्वयंपूर्णता पायेगा, जिससे हमारे गांवों के युवक गांवों में ही सेवा करेंगे। शहर की मिथ्य चमक से हटकर अपना हुनर या अनुभव गांव हित में लगाकर गांव को समृद्ध करेंगे, इससे शहरों का बढ़ना थमकर गांव एवं शहरों में खुशहाली आयेगी।

वृक्षारोपण :- वृक्ष हमारे जीवन व जगत के रक्षक हैं, अतः हमारा जीवन पूरी तरह से पेड़-पौधों पर निर्भर है। जीवन रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, सूखा, बाढ़, गर्मी व अन्य भंयकर खतरों से हम तभी बच सकते हैं, जब हमारे आस-पास पेड़ होंगे। हमने जंगलों व गांव के पेड़ों की बेरहमी से कटाई की है और इसी के परिणामस्वरुप आज जलवायु परिवर्तन व वर्षा की कमी जैसी भयावह समस्या पैदा हुई है।

सोना, चांदी, बड़ी गाड़ी व बड़े भवन हम विकास व विलासिता के नाम पर तुरन्त खरीद सकते हैं या इनको बना सकते हैं, परन्तु जिन वृक्षों के आधार पर जीवन चल रहा है, उनको लगाने व बड़ा करने में कम से कम १५ से २० वर्ष लगेंगे, तो आइए अभी से भारत के स्वर्णिम भविष्य को बनाने व अपनी भावी पीढ़ियों को बचाने के लिए आज से ही जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ, पितरों की स्मृति व पवित्र पर्वों पर वृक्ष लगाने का संकल्प लीजिए। अपने मित्रों व परिजनों को भी खुशी के मौकों पर औषधीय गुणायुक्त नीम, अर्जुन,

आंवला आदि पेड़ गिलोय, तुलसी व घृतकुमारी आदि जड़ी-बूटियों के पौधे उपहार में दें। वृक्ष का यह महत्व जानकर सन्त तुकाराम महाराज जी ने यह कहा था कि **"वृक्षवल्ली आम्हा सोयरी, वनचरे।"**

इस देश की संस्कृति ही विश्व का परिधान है,
देशप्रेम ही देशभक्ति के भावों की पहचान है,
तिरंगे के देश का वासी बड़ा भाग्यवान है,
यह सब भगवान का दिया हुआ वरदान है।
हर देशवासी तिरंगे का करता सम्मान है,
और हर कोई करता इसका गुणगान है,
क्योंकि यह हर किसी की शान हैं,
इसका निर्माता बुद्धि, कला में बलवान है,
साथ ही निर्माता का निर्माता भगवान है।

हम हमारे घर बड़े-बड़े तो बना लेते हैं पर पेड़ों के लिये कुछ भी जगह नहीं छोड़ते, जो घर के आजू-बाजू में जगह होती है, उसका भी हम सिमेंटीकरण कर देते हैं। साथ में रोड़ को डामर व सीमेंट का बनवाकर आजू-बाजू में टाइल्स लगाते हैं। इससे वर्षा का जल जमीन के अन्दर न जाकर नदी, नालों में बह जाता है, जिससे कुओं व तालाबों आदि का जलस्तर कम हो जाता है।

याद रखें घर छोटा जरुर बनाये पर घर के आजू-बाजू में नीम, गुलमोहर, आंवला आदि पेड़ जरुर लगायें, जिससे जल पीने के लिए, खेतों, गांव के लिए हरदम उपलब्ध रहेगा। गांव में जो बगीचे हैं, उनमें दिखावटी पौधे न लगाकर बड़े-बड़े पेड़ लगायें, जिससे हम जंगल बगीचा कह सकते हैं, जिससे गांव हरदम हरे-भरे रहेंगे व गांव में पानी का जल स्तर हरदम अच्छा रहेगा। गांव को पेड़ के प्रति रिश्तेदारों के समान प्यार दिखाना चाहिए, हर बच्चे को, घर को कम से कम एक पेड़ के पालन-पोषण करने की जवाबदारी अवश्य देनी चाहिए। जो पेड़ों के प्रति अच्छा कार्य करेगा उसे ग्राम सभा द्वारा पुरस्कृत करना चाहिए।

शिक्षा में गुणात्मक सुधार :- महात्मा गांधी का स्पष्ट मानना था कि मात्र अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं है। वह तो शिक्षा का मात्र एक अंग है। उसके साथ संस्कार व स्वदेशी के दर्शन पर आधारित शिक्षा जिसमें स्वदेशी भाषा, वस्तु, वस्त्र, विचार, स्वदेशी भेषज, भोजन व भजनादि पर आधारित भारतीय शिक्षा का समावेश हो। बच्चों को प्रारंभ से ही स्वदेशी से स्वावलम्बी भारत बनाने की दीक्षा दी जाए और विद्यालयों में ही स्वदेशी वस्तुएं, वस्त्र व स्वदेशी आयुर्वेदिक दवा आदि बनाने का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाए व उन वस्तुओं को बाजार में बेचने की भी व्यवस्था की जाए। विद्यालयों से न्यूनतम मूल्य पर उच्च गुणवत्ता युक्त नित्य प्रयोग उत्पादों शैम्पू, साबुन, टूथपेस्ट, मोमबत्ती, अगरबत्ती, क्रीम, पाउडर, देशी दवा, च्यवनप्राश, आंवलादि के चूर्ण व वस्त्रादि को स्थानीय लोग ममता, प्रेम भाव स चाव से खरीदें, इससे शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति होगी। विद्यालय में शिक्षकों व विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति, प्राणायाम, आसन व ध्यानादि के नियमित अभ्यास से बच्चों का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक सर्वांगीण विकास के कार्यक्रम चलाना। गांव के स्कूल गुरुकुल पद्धति के हों, जिसमें आधुनिक, प्राचीन व आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, नैतिक, बौद्धिक शिक्षा हो। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रहनी चाहिए, क्योंकि प्रायः यह देखा गया है कि बच्चों की ज्ञान की आकलन शक्ति मातृभाषा में अधिक होती है। स्कूल के ग्राऊंड में बड़े-बड़े पेड़ हों, जिसके नीचे कक्षायें लगाई जा सकें, ताकि विद्यार्थी अनुकूल, प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा पा सकें।

हमें बच्चों को ऐसा शिक्षण देना नहीं है कि जिससे वह सिर्फ दिखाऊ कपड़े पहनकर शान मारे, पढ़ने के बाद भी वह खेती में काम करने में शर्म न महसूस करें, घरवालों को बच्चों का उचित गुण पहचानकर उनको उस क्षेत्र में प्रोत्साहन देकर परिपूर्ण होने में मदद करनी चाहिए, उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ नदी व तालाब में तैरना आना चाहिए, आपातकालीन स्थिति में पीड़ितों को मदद करने के लायक बनें। बच्चे रसोईकला, घर कला, व्यवहारिक ज्ञान में निपुण हों। वह मलखाम व कुश्ती खेलें, बच्चों को अनेक कला में पारंगत होना चाहिए, उनका ज्ञान कागजी न होकर खेती व छोटे उद्योगों में प्रत्यक्ष रुप से काम आ सके, उन्हें गांव संभालने का व आदर्श करने का प्रशिक्षण मिलना चाहिए। उन्हें सहकार्य, जनसेवा, चरित्र का महत्व पता होना चाहिए। माता-पिता को उन्हें ज्यादा प्यार व ढील नहीं देनी चाहिए, उन्हें जोतने की व गोबर उठाने में शर्म न हो।

- गुरुकुल सलखिया, रायगढ़ (छ.ग.)

एक समकालीन इतिहासकार द्वारा -

ऋषि दयानन्द के उदयपुर प्रवास का वर्णन

ऐतिह्य

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

कृष्णासिंह बाहरठ (चारण) मूलतः शाहपुरा राज्य के एक गांव के निवासी थे । वे कवि प्रतिभा सम्पन्न, सुपठित व्यक्ति थे । शाहपुरा के राजधिराज नाहरसिंह ने उन्हें मेवाड़ के महाराणा के दरबार में अपना प्रतिनिधि बना कर उदयपुर भेजा था । वे महाराणा प्रताप सज्जनसिंह के विश्वसनीय दरबारी थे। यही समय था जब ऋषि दयानन्द का उदयपुर आगमन हुआ । पर्याप्त समय तक वे राणा सज्जनसिंह के अतिथि बनकर नवलखा राजमहल में रहे । इसी समय महाराज के उच्च राज्याधिकारियों तथा विश्वसनीय दरबारियों को भी स्वामी जी के सम्पर्क में आने, उनके विचार जानने तथा उनके विचारों से प्रभावित होने का अवसर मिला ऐसे व्यक्तियों में कवि राजा श्यामलदास, महद्राज सभा के मंत्री पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या तथा बारहढ़ कृष्णासिंह के नाम उल्लेखनीय है । कालान्तर में बारहढ़ जी ने समकालीन राजपूताना की रियासतों, उनके अंग्रेज शासकों से संबंधों तथा अन्य सामयिक समस्याओं को ध्यान रख कर एक वृहद् इतिहास राजपूताना का अपूर्व इतिहास शीर्षक लिखा । इसकी पाण्डुलिपि को अपने वारिसों को सौंपते समय उन्होंने आदेश दिया कि इस ग्रन्थ को उनकी मृत्यु के पर्याप्त समय पश्चात् प्रकाशित किया जाये ।

इसका कारण सम्भवतः यथा कि ग्रन्थ में राजाओं, उनके दरबारियों, अंग्रेज अधिकारियों आदि के कार्य व्यापारों को लेकर अनेक प्रकार की आलोचनाएं तथा टीका टिप्पणियाँ की गई थी, जो सम्भवतः उन्हें (लेखक) की असुरवाद स्थिति में पहुंचा सकती थी । अन्ततः श्री फतहसिंह मानव के कारण वर्षों पश्चात् यह इतिहास तीन खण्डों में २००९ में प्रकाशित हुआ । प्रथम खण्ड में लेखक ने स्वामी दयानन्द के जीवन की जो रुपरेखा प्रस्तुत की है उसे यहां दिया जा रहा है :- यहां पर एक संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती का हाल लिखते हैं जो रईसों (नरेशों) के हालात से कम नहीं है । क्योंकि यह (दयानन्द) इस समय भारतवर्ष के सम्पूर्ण विद्वानों का शिरोरत्न और वेदमत के प्रचारक वेदव्यास तथा शंकराचार्य के समान है । काठियावाड़ प्रान्त में जाड़ेचा राजपूतों की राजधानी मोरवी (मोरबी) में एक गुजराती औदीच्य ब्राह्मण के घर में संवत् १८८१ में इनका जन्म हुआ और चौदह वर्ष अवस्था तक संध्या वंदन, गायत्री, यजुर्वेद संहिता आदि कर चुके थे । इनके पिता शैव मतावलम्बी होने से एक दिन इन्हें शिवरात्रि का पूजन करने भेजा । यहां रात्रि में शिवलिंग पर चूहे दौड़तें और मींगनियां (मल त्याग) करते देख कर इनको विचार हुआ कि यह देवता (शिव) अपनी ही रक्षा नहीं कर सके तो हमारी क्या सहायता करेंगे, ऐसे प्रतिमा पूजन को और ऐसे ईश्वर को मानना मूर्खता है । उसी समय शिवरात्रि का व्रत तोड़कर अपने घर पर आकर पिता से इसका प्रश्न किया । परन्तु यथार्थ उत्तर नहीं मिलने से मूर्तिपूजन से अरुचि करके विद्या पढ़ने में ज्यादा परिश्रम किया । कुछ अर्से बाद इनकी बहिन और चाचा का देहान्त हो गया । जिससे इनकी बहुत प्रीति थी । यहां से इनकी सांसारिक बातों से उपराम होकर मोक्ष के साधन पर चित्त लगा । परन्तु इनके पिता ने इनके विवाह की तैयारी की जिसकी खबर पाकर पिता आदि सब लोगों को छोड़कर चुपचाप घर से निकल गये और बाईस वर्ष कीं अवस्था में पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास लेकर अपना नाम दयानन्द सरस्वती रखा । संवत् १९११ में कुम्भ के मेले में हरिद्वार गये । वहां से देशाटन करते, विद्या पढ़ते हुए हिमालय के समीप जाकर वहां के योगियों से योग विद्या सीखी ।

फिर सं. १९१६ (१८५९ई.) में मथुरा शहर में आकर स्वामी विरजानन्द से वेद और छः शास्त्र आदि पढ़े और पूर्ण विद्वान् हो जाने पर सं. १९२६ (१८६९ई.) से देश देशान्तर घूमकर शास्त्रार्थ करके वेदमत का प्रचार करना आरम्भ किया। इन्होंने आर्यों के सनातन धर्म का प्रचार करना ही अपना मुख्य काम समझा, जिसमें काशी आदि अनेक स्थानों पर शास्त्रार्थ करके विजय पाकर सम्पूर्ण भूगोल में अपना नाम प्रसिद्ध किया। सं. १९३१ में इन्होने आर्यावर्त देश में आर्यसमाज स्थापित

करने शुरु किये जिसमें सबसे पहला आर्यसमाज बम्बई शहर में नियत हुआ। इसके पश्चात् अनेक स्थानों पर आर्यसमाज नियत हो गये। आर्यसमाज के लिए दस नियम इन्होंने बनाये और समाज के सम्पूर्ण सिद्धान्त वेद के अनुकूल रखे। उधर पंजाब देश में पादरी लोगों ने पंजाबियों को उपदेश देकर ईसाई बनाना शुरु किया। वहां जाकर दयानन्द सरस्वती ने तीन लाख मनुष्यों को ईसाई मत में जाने से बचा कर वेद मतावलम्बी बनाये। फिर शास्थार्थ करते और दिग्विजयी होते हुए सं. १९३९ (१८८२ई.) में राजपूताना में आये और सात महीनों तक उदयपुर में रहकर पहले तो शास्त्रार्थ और फिर उपदेश किया। पश्चात् अपने बाद अपने कायम मुकाम एक सभा मुकर्रर करके महाराणा सज्जन सिंह को सभापति बनाकर सभा का नाम परोपकारिणी रखा जिसमें और भी कई मेम्बर मुकर्रर किये। इसके साथ ही दयानन्द सरस्वती ने अपना वसीयतनामा (स्वीकार पत्र) बनाया जिसमें लिखा कि मेरे देहान्त के बाद मेरे स्थानापन्न किसी को न बनाया जाये। यह परोपकारिणी सभा ही मेरे स्थानापन्न रहकर वेद विद्या पढ़ाना व अनाथों का पालन करना-कराना, अच्छे सत्य वक्ता विद्वानों को उपदेशक रख कर वेदमत का प्रचार करना आदि परोपकारिणी कार्य कराये।

इन नियमों के पालन का कुल भार महाराणा सज्जनसिंह पर छोड़कर स्वामी दयानन्द फाल्गुन महीने में उदयपुर से शाहपुरा गये और राजाधिराज नाहरसिंह को उपदेश दिये। फिर जोधपुर गये। यहां कई व्याख्यान दिये और महाराजा जसवन्तसिंह को उत्तम-उत्तम उपदेश दिये। परन्तु महाराजा के मर्जीदान मुसलमानों के और नन्नी वेश्या के सबब महाराजा पर स्वामी दयानन्द के उपदेशों ने असर नहीं किया। परन्तु महाराजा जसवन्त सिंह के छोटे भाई महाराज प्रतापसिंह ने इनके उपदेशों से बहुत लाभ उठाया।

जोधपुर के ब्राह्मणों ने एकत्रित होकर इनसे शास्त्रार्थ करना चाहा परन्तु इन बेचारे निरक्षरों की क्या ताकत थी कि जो उनके आगे ठहर सकते। आखिरकार जोधपुर के स्वार्थी ब्राह्मणों ने इनके रसोईदार को मिलाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती को जहर पिलाया, इससे सख्त बीमार होकर इलाज कराने को जोधपुर से आबू गये, परन्तु वहां ज्यादा ठहरना नहीं होकर अजमेर आये, जहां संवत् १९४० (१८८३ई.) कार्तिक बदी अमावस्या मंगलवार दीपावली के दिन अजमेर में इनका देहान्त हो गया। डाक्टरों ने इनको निमोनिया अर्थात् फेफड़े की बीमारी होना जाहिर किया, इससे जहर होने बाबत हम अपनी राय जाहिर नहीं कर सकते। परन्तु इतना अवश्य कहते हैं कि इस संन्यासी अद्वितीय पण्डित का इतना जल्दी देहान्त हो जाना भारत वर्ष निवासी आर्यों का हतभाग्य था। इनकी विद्वता के कारण ईसाई पादरी परास्त होकर आर्यों को ईसाई बनाने में निराश हो गये थे और स्वार्थी ब्राह्मणों की फैलाई हुई भ्रम जाल भी टूट कर पाखंडियों का पाखण्ड टूटने पर आ गया था। इसी तरह गोकलिया गुसाई, रामस्नेही आदि लोग इनसे परास्त होकर अपना दम गिनने लगे थे। इनकी अपूर्व विद्या तो इनके बनाये ग्रन्थों से भी सिद्ध हो सकती है, परन्तु इनकी हाजिर जवाबी इस ग्रन्थकर्ता (बारहण कृष्णासिंह) ने देखी है, जिसके आगे किसी शास्त्रार्थ करने वाले का ठहरना असम्भव था। थोड़े अक्षरों में उत्तम उत्तर देना परमेश्वर ने इस समय में इन्हें ही दिया था।

इन्होंने नवीन ग्रन्थ बनाकर जटा जी, कुरानी, पौराणिक, ईसाईयों के मत खण्डन किये जिसमें सबसे बड़ा और उत्तम ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है और सबसे बड़ा काम इन्होने वेद भाष्य बनाने का किया, जो सरल संस्कृत व देवनागरी (हिन्दी) में ऋग्वेद और यजुर्वेद का भाष्य बना दिया जो छप रहा है। यदि परमेश्वर पांच वर्ष भी इनका शरीर और रखता तो बाकी भाष्य भी बन जाते।

संन्यासी लोगों के शरीर को देहान्त के बाद भूमिदाह करते हैं, परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती के स्वीकार पत्र के अनुसार इनका अग्निदाह किया गया और अजमेर में इनके नाम पर दयानन्द आश्रम बनाया जाकर उसमें वेद विद्या पढ़ाने का और अनाथों के पालन का प्रबंध परोपकारिणी सभा ने किया है और अब आर्यावर्त में आर्यसमाज भी छः सौ के करीब हो गये हैं जो इस कार्य में सहायता देने को तैयार हैं। परमेश्वर इनको सुमति देवे जो आपस में फूट नहीं पड़ने देकर एकता से इसके सहायी बने रहें। स्वामी दयानन्द सरस्वती का लम्बा कद, भरा हुआ मोटा बदन, गेहुवा रंग, मोटा सिर, चौड़ा चेहरा, सिंह के समान रौबदार और तेजस्वी स्वरुप था।

पता : ३१५, शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

मातृभूमि की पूजा करके, नफरत मत करिए।
अपनी धरती माँ से आप, बगावत मत करिए॥
स्वर्ग समान देश, निर्भय सबका जीवन है।
देशद्रोही बनकर, भयभीत मत करिए॥
कई त्याग, बलिदानों से देश आजाद हुआ।
सपने में भी देश को विभाजित मत करिए॥
समान अधिकार, गौरव, सुविधा सब तो है।
सुख चैन से जी कर भी शिकायत मत करिए॥
विश्व शान्ति के पुजारी, क्षमा के पहरेदार हम।
दुष्कर्मों से शीश झुके, ऐसा भारत मत करिए॥
गंगा जमना सभ्यता हमसे दुनिया सीखी है।
गौरवशाली भारत को अपमानित मत करिए॥
तुमको है सौगंध मिट्टी की, खुद को मत बेचिए।
बदनाम देश हो ऐसा कदाचित् मत करिए॥
मजहबों की दुकानों से खूब तिजारत कर लिए।
अब तो बाज आओ, फिर वही हरकत मत करिए॥
भारत माँ की संतान सारी, संग जीऐंगे मरेंगे।
अपनो से हो या गैरों से विश्वासघात मत करिए॥
आबरु वतन की बचाये रखिए।
एकता वतन की बनाये रखिए॥
यूँ तो चमकता है हिमालय मगर।
आसमान में तिरंगा लहराये रखिए॥
भेदभाव के काँटे जहाँ भी पलते हैं।
उन पेड़ों को जड़ से मिटाये रखिए॥
सुलगती आग दुश्मनी की दोस्तों।
बढ़ने से पहले बुझाये रखिए॥
अंधियारा चाहे हो जाये जितना
मन बाती में दीप जलाये रखिए॥
चाहे छूट जाये तुमसे कारवाँ मगर।
मंजिल की ओर कदम बढ़ाये रखिए॥
धन-दौलत, नहीं भाईचारा चाहिए।
यही होठों पर सदा दुआयें रखिए॥

- नरेश हमिलपुरकर
संपादक : राष्ट्रीय बुलेटिन
भासकरनगर, चिटगुप्पा, बीदर-कर्नाटक

कविता
ओ३म् प्राणमय तत्व

सर्व व्याप्त अदृश्य है, निराकार भगवान।
यदि होता साकार वह, सब लेते पहचान।
वेद सृष्टि आरम्भ हो, सत्य ज्ञान सद्ग्रन्थ।
सहज विश्व कल्याण का, एक अलौकिक पंथ।
श्रेष्ठ आर्यजन विश्व में, ऋषि-मुनि की सन्तान।
चारों वेदों में निहित, सत्य ज्ञान-विज्ञान।
आर्यों की जन्म स्थली, पावन आर्यावर्त।
उज्ज्वल छवि दिख जाएगी, आओ पोंछे गर्त।
वर्ण व्यवस्था जन्म से, कभी नहीं स्वीकार्य।
आर्य जाति के शत्रु दो, शूद्र ज्ञान, पाखण्ड।
बढ़े अन्ध विश्वास जब, जले समाज प्रचण्ड।
तीनों आदि अनन्त है, जीव प्रकृति भगवान।
जड़ चेतन का हेतु है, अणु-परमाणु घनत्व।
धन, पद अथवा ज्ञान से, भरे न मन का पात्र।
अक्षय, अमित अनन्त है, ओ३म् साधना मात्र।
वातावरण विशुद्ध हो, यदि घर-घर हो यज्ञ।
भारत होगा विश्व गुरु, जन-जन बने सुविज्ञ।

- गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
पता : ११७, आदिल नगर, डाकघर विकास नगर, लखनऊ २२६०२२

आदमी

आश्रय देने पर सिर चढ़ जाता है।
उपदेश देने पर मुड़कर बैठता है॥
आदर करने पर खुशामद समझता है।
उपकार करने पर अस्वीकार करता है॥
विश्वास करने पर हानि पहुंचाता है।
क्षमा करने पर दुर्बल समझता है॥
प्यार करने पर आघात करता है।
क्या यह चरित्र उचित है?

सौजन्य : श्री नित्यानन्द वानप्रस्थी जी, रायगढ़

स्वामी समर्पणानन्द - व्यक्ति नहीं विचार

(कीर्तिर्यस्य स जीवति)

१ अगस्त जयन्ती - स्वामी विवेकानन्द

अशेषसेमुषी सम्पन्न तथा अलौकिक प्रतिभा के धनी स्वनाम धन्य पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी की शताब्दी उन्हीं के द्वारा संस्थापित प्रभात आश्रम, मेरठ में विगत काल मनायी गयी। इस अवसर पर वेद शोध संगोष्ठी सम्पन्न हुई, अनेक विश्वविद्यालयों के मान्य विद्वानों ने अपने शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए, ब्रह्मचारियों ने स्वरचित संस्कृत पद्यों से पूज्य स्वामी जी को श्रद्धाजंलि समर्पित की। इस प्रकार यह कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

मेरे मस्तिष्क में प्रश्न उत्पन्न हुआ- जिस व्यक्ति की हम जन्म शती मना रहे हैं, क्या वह केवल एक सुशिक्षित व्यक्ति मात्र था अथवा कुछ और भी ? बहुत ऊहापोह एवं चिन्तन के पश्चात् मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि वह केवल व्यक्ति मात्र नहीं किन्तु विचार थे। उनके लिखित ग्रन्थ- कायाकल्प, पञ्चयज्ञ प्रकाश, गीता, भाष्य, ऋग्वेद मण्डल मणिसूत्र, शतपथ ब्राह्मण भाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद का आंशिक भाष्य, किसकी सेना में भर्ती होंगे, कृष्ण या कंश की ? सप्त सिन्धु सूक्त, वेदों के सम्बन्ध में क्या जानों क्या भूलों आदि ग्रन्थों का आलोडन,परिशीलन करने से स्पष्ट हो जाता है कि इन ग्रन्थों का लेखक केवल असाधारण विद्वान् ही नहीं अपितु अपराजेय ऊहा, विलक्षण प्रतिभा रहस्य उद्घाटिनी मेधा एवं अतर्क्य पाण्डित्य का धनी था।

वे कोरे अक्षरों के पण्डित ही नहीं अपितु स्वलक्ष्य निर्धारित निर्भ्रान्त विचारधारा से परिपूर्ण भी थे। उनका दृष्टिकोण तथा लक्ष्य मध्यान्ह भास्कर के देदीप्मान प्रकाश में हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष था। वे बाल्यकाल से ही तातस्य कूपोऽयमिति में आस्था रखने वाले नहीं थे। सामान्य से सामान्य बातों को भी जब तक मन-मस्तिष्क स्वीकार नहीं कर ले, तब तक उसे अपनाने में उन्हें संकोच होता था। बाल्यकाल के गुरुकुलीय जीवन में गले से यज्ञोपवीत निकाल फेक देने वाली घटना इसका ज्वलन्त प्रमाण है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा यह कहने पर कि यह गुरुकुल का अनुशासन है। इसका तुम्हारी आस्था से सम्बन्ध नहीं। यदि तुम्हें गुरुकुल में पढ़ना है तो यज्ञोपवीत धारण करना ही होगा। उन्होने अनुशासन मानकर यज्ञोपवीत पुनः धारण कर लिया किन्तु उसने अपनी आस्था का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उनका अहर्निश यज्ञोपवीत धारण करने के विषय में चिन्तन करना उनकी जागरूकता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

यज्ञोपवीत ही क्यों प्रत्येक विषय पर उनका यही दृष्टिकोण रहा, चाहे वर्ण व्यवस्था हो, वेद वैदिक मान्यतायें एवं परम्परायें, कोई भी विषय हो, उन्होंने उसे तभी स्वीकारा, जब उन्हें तर्क-वितर्क के पश्चात् उससे सन्तुष्टि हुई। ऋषि दयानन्द की विचारधारा को भी उन्होंने इसी प्रकार अपनाया। किन्तु उनकी विशेषता यही थी कि जब एक बार वैदिक ऋषियों के सिद्धान्तों को उन्होंने स्वीकारा तो वे उसे आत्मसात् कर गये। कभी किसी वैदिक विषय में भ्रम होने पर उन्हें अपनी प्रज्ञा की न्यूनता ही कारण जान पड़ी, वेद या ऋषियों के सिद्धान्तों की निरर्थकता नहीं। महाभाष्यकार पतञ्जलि के इस वाक्य का वे ऐसे अवसर पर असकृत् ध्यान करते थे -

व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्।

कई बार लोगों का प्रश्न होता है - क्या स्वामी समर्पणानन्द जी का कोई पृथक् स्वतन्त्र विचार था। इसका एकमात्र यही उत्तर सम्भव है कि आर्य परम्परा विरोधी उनका कोई विचार नहीं था। वे मनु की भांति आर्ष परम्परा के अनन्य उपासक थे -

आर्षधर्मोपदेशेन वेदशास्त्राविरोधिना।
यस्तर्केणानु संधत्ते स धर्म एव नापरः॥ मनुस्मृति

ऋषि दयानन्द का यह वाक्य उनका पथ प्रदीप था -मैं वही मानता हूँ, जो ब्रह्मा से लेके जैमिनी मुनि तक ऋषि महर्षि मानते आए हैं। इन्हीं आदर्श वाक्यों पर निष्ठा रखते

हुए उन्होने समस्त वैदिक वाङ्मय से लेकर इतिहास, पुराण, उपपुराण, वैद्यकशास्त्र, संगीतशास्त्र, बाईबिल, कुरान तथा अन्य पौरस्त्य, पाश्चात्य सभी दार्शनिकों के अशेष वाङ्मय का गंभीर अध्ययन किया। इस गम्भीर विस्तृत अध्ययन ने ही उन्हें वैदिक ऋषियों एवं उनके सिद्धान्तों का एकनिष्ठ प्रबुद्ध प्रहरी बनाया। उनके ग्रन्थ का एक-एक वाक्य तथा उनकी स्थापना या मान्यता आर्ष परम्परा की पोषक तथा आर्ष परम्परा से उद्‌भूत है। उनके सम्बन्ध में यह कहना यथोचित होगा कि वे आर्ष परम्पराओं के मूर्तिमान् स्वरूप थे।

कुछ अल्पश्रुत पण्डितम्मन्य लोग जब उनके विस्मृत उदधिकल्प विचारों में डूबने लगते हैं तो अपने बौनेपन को छिपाने के लिए उन्हें कल्पना-प्रसूत तथा न जाने क्या-क्या कहने की धृष्टता करते है। स्वामी समर्पणानन्द जी के विषय में इस प्रकार कहते हुये ये लोग भूल जाते हैं कि इस दृष्टि से ये ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को भी कल्पना-प्रसूत कह रहे होते हैं क्योंकि ऋषि दयानन्द ने भी यजुर्वेद भाष्य में उक्त प्रकार से ही संगति लगाने का प्रयास किया है। ऋषि दयानन्द की संगति तो और अधिक विचार-चिन्तन की अपेक्षा रखती है।

आज हम उनके जन्मदिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए यह संकल्प लें तो श्रेयस्कर होगा कि हम भी उन्हीं की भांति गंभीर अध्येता बनकर अनन्य निष्ठा से आर्ष परम्पराओं के प्रचारक एवं प्रसारक बनेंगे। इस समय अन्य समस्त विचारधाराओं के असफल हो जाने पर इसी वैदिक आर्ष विचारधारा की ओर लोगों की दृष्टि लगी हुई है। आवश्यकता बस इस बात की है कि हम आलस्य प्रमाद छोड़कर अदम्य उत्साह एवं धैर्य के साथ इसके प्रसार में लग जायें।

हे विद्यानिधे! तेरी प्रतिभा कुछ अद्‌भुत और निराली थी।
प्रतिरक्षी जिससे कांप उठे वह बुद्धि तेरी आली थी॥
जब वक्ता बन कर बोले तुम मानों सरस्वती बोल रही।
वेदों के गूढ़ रहस्यों को अपनी बुद्धि से खोल रही॥

-प्राचार्य - गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

रक्षाबंधन के अवसर पर

स्नेह भरे दो तार

भाई से बहनों ने पूछा, कर लोगे स्वीकार?
स्नेह भरे दो तार।

❀

इन धागों को लेकर भाई, तुमको प्राण जलाने होंगे।
कष्ट कठिन अन्तर बहनों के, तुमको आज सजाने होंगे॥
तुम्हें जलाने होंगे दीप घोर गहन तम की बेला में,
और विलासी सारे क्षण यह, तुमको स्वप्न बनाने होंगे॥
बड़ा कठिन व्यवहार! है बोलो स्वीकार?
स्नेह भरे दो तार॥

❀ ❀

एक ओर बहनों की लज्जा, पैसे के बदले में बिकती।
जलती, लुटती, मिटती, रोती जीवन भर ज्वाला में बिकती॥
और हर्ष में मतवाले तुम, भूल चुके यह करुण कहनी।
सोच रहे हो इसी लहर में, पागल सारी दुनियां बहती॥
उठा सकोगे भार? तो लो यह पतवार!
स्नेह भरे दो तार॥

❀ ❀ ❀

बन्धु! नहीं भिक्षा की झोली, यह तो है कर्तव्य पुकार!
बहन तुम्हारे सम्मुख आयी, तुम उसको दोगे दुत्कार॥
आज तुम्हारा सारा जीवन और सुखी संसार मांगती,
रक्षा के हित पास तुम्हारे, आ करती हूँ मैं मनुहार॥
जोड़ो टूटे तार! यही बने श्रृंगार।
स्नेह भरे दो तार॥

❀ ❀ ❀ ❀

सौजन्य - **लोचन शास्त्री**, दयानन्द परिसर, दुर्ग (छ.ग.)

नूतन प्रयास

सांस्कारिक पृष्ठभूमि से अभिनव समाज

(आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन)

- अर्जुनदेव चड्ढा

विवाह मात्र स्त्री-पुरुषों के बीच का संबंध न होकर मानव समाज के विकास का सोपान है। सम्पूर्ण समाज का तानाबाना, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक अवधारणाएँ विवाह पद्धति के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। इसीलिए आर्यसमाज ने अपने अभ्युदय से ही विवाह पद्धति पर बहुत जोर दिया है। वह शुरु से ही रुढ़िवादी विवाह पद्धति के विरोध हो रहा है।

महर्षि मनु ने आठ प्रकार के विवाहों में जिन चार को श्रेष्ठ माना है उसमें श्रेष्ठत्व का कारण है युवक-युवतियों का परस्पर गुण, कर्म और स्वभाव के मेल के आधार पर विवाह करना। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि युवक एवं युवतियाँ गुरु से अनुमति प्राप्त कर सदृश गुण कर्म तथा स्वभाव वाले युवक या युवती से ही विवाह करें।

आर्य समाज के विचारकों, मनीषियों ने अपने दीर्घकालीन चिन्तन से निष्कर्ष निकाला कि ऋषि ने जिस प्रकार से गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर विवाह की बात कही, उसके क्रियान्वयन के लिए उचित मंच प्रदान किया जाए, जिससे आर्यसमाजी परिवार के युवक-युवतियों का विवाह आर्यसमाजी परिवार के युवक-युवतियों से हो सकें।

परिणाम स्वरुप आर्यसमाज में आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन की श्रृंखला प्रारम्भ की गई। जिसकी शुरुआत सन् २०१० में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा की गई। इसके तहत दिल्ली तथा भारत के अन्य स्थानों में इस प्रकार के सम्मेलन आयोजित किये गये। जिसके उत्साहजनक परिणाम भी रहे। आर्य परिवारों के संबंधों की संख्या बढ़ी है तथा युवा इस ओर आकर्षित हो रहे हैं।

महर्षि दयानन्द ने कहा है कि संस्कारित माता-पिता ही संस्कारवान् संतान का निर्माण करते हैं और आज के इस घोर भौतिकवादी युग में जहां परिवार दरक रहे हैं, रिश्तों में खटास बढ़ रही है, नई पीढ़ी में संस्कारों का लोप हो रहा है। ऐसे समय में आर्यसमाज द्वारा संस्कारवान् युवक-युवतियों को विवाह के लिए एक समग्र मंच प्रदान कर नये समाज के सृजन में ये वैवाहिक परिचय सम्मेलन महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। निश्चित रुप से इससे आर्य समाज का संगठन और भी मजबूत होगा और वैदिक धर्म का व्यापक पीढ़ीगत प्रचार प्रसार होगा।

अत्यावश्यक सूचना : स्थगन सूचना

८वाँ आर्य परिवार विवाह परिचय सम्मेलन

समस्त आर्य परिवारों को सूचित किया जाता है कि जून में सभी रिकार्डों को तोड़ती हुई अत्याधिक गर्मी होने एवं रेल्वे में आरक्षण सेवा उपलब्ध न मिल पाने के कारण दिनांक १५ जून २०१४ को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.) में आयोजित होने वाला ८वाँ आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन स्थगित कर दिया गया है। अब यह सम्मेलन रविवार २८ सितंबर २०१४ को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर में ही आयोजित किया जाएगा। दिल्ली सम्मेलन की तिथियों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। वह निर्धारित समय २० जुलाई २०१४ को आर्यसमाज कीर्तिनगर में ही आयोजित किया जाएगा। आर्यजनों को हुई असुविधा के लिए खेद है। दोनों सम्मेलनों के लिए रजिस्ट्रेशन किये जा रहे हैं।

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक,

मोबा. : ०९४१४१-८७४२८

संदेशात्मक

महर्षि का वास्तविक जीवन-दर्शन

- खुशहालचन्द्र आर्य

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. महेश जी विद्यालंकार द्वारा लिखित "ऋषि दयानन्द की अमर गाथा" शीर्षक पुस्तक से उद्घृत किया है। इस पुस्तक में महेश जी ने महर्षि के गुण, कर्म, स्वभाव पर इतनी सुन्दर विवेचना की है, जिसको पढ़कर अति प्रसन्नता तो होती ही है, साथ महर्षि का व्यक्तित्व व कृतित्व की भी पूरी जानकारी हो जाती है। इस पुस्तक को पढ़कर आर्यसमाजी तो अति हर्षित होता ही है, यदि इसको कोई विरोधी विचार रखने वाला व्यक्ति भी पढ़ लेवे तो वह इतना अधिक आकर्षित होगा कि वह बार-बार इस पुस्तक को पढ़ने की इच्छा करेगा। यह पुस्तक केवल ८६ पृष्ठों की है, मेरी इच्छा होती है कि यह पूरी पुस्तक ही पांच-छः लेखों में उद्घृत कर दूं, पर दो तीन लेख तो मैं अवश्य ही लिखूंगा जिससे सुधि पाठकगण इसकी सरसता का आनन्द उठा सकें। प्रथम लेख भी इसी भांति है -

सदियों के बाद इस धरती को ऋषि दयानन्द के रुप में ऐसा महापुरुष मिला, जिसने जीवन तो उनसठ वर्ष का प्राप्त किया, परन्तु कार्यकाल का जीवन केवल २० वर्ष का ही रहा, इतने अल्प समय में ही उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के आलोक में संसार को चमत्कृत कर दिया। सोई हुई मानव जाति को जीवन जीने का सच्चा, सीधा तथा सरल मार्ग दिखा गया। प्रत्येक क्षेत्र में ऋषि ने वेदसम्मत, सत्य, वैज्ञानिक, व्यवहारिक तथा उपयोगी मार्गदर्शन दिया। उनके संकल्प था - **"ऋतं वादिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, सत्यंवदिष्यामि"** इस व्रत को उन्होंने जीवन भर निभाया। उन्होंने सत्यमेव जयते अन्त में सत्य की ही विजय होती है, इस वाक्य को जीवित रखा। उन्होंने सत्य की रक्षा के विचलित नहीं हुए। प्रायः लोग धारा के साथ बहते हैं, परन्तु ऋषि ने धारा के विपरीत चलने का मानों प्रण कर रखा था। देश, धर्म और समाज की परिस्थितियां ही कुछ ऐसी थी, जिसमें गलत बातों से समझौता करके चलने से काम बनने वाला नहीं था। इसलिए ऋषि का सम्पूर्ण जीवन मुसीबतों, कष्टों, बाधाओं और विपरीत परिस्थितियों में निकला। मगर स्वामी जी कभी निराश, हताश और दुःखी नहीं हुए। सच है कि -

सदियों तक इतिहास न समझ सकेगा।
तुम मानव थे या मानवता का महाकाव्य॥

ऋषि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व चुम्बकीय था। जो भी इनके सम्पर्क में आया, उसी का कायाकल्प हो गया। न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, लेखराम आदि जीवनों को उन्होंने सन्त, महात्मा परोपकारी बना दिया। इतनी प्रेरक, आकर्षक तथा जादुई शक्ति और किसी महापुरुष में नजर नहीं आती। लोग तलवार लेकर आए, शिष्य बनकर गये। जिसने भी उन्हें देखा, सुना और सम्पर्क में आया, उसी पर उनका जादू चल गया। जिधर से निकले, उधर ढोंग, पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास को मिटाते हुए सत्यधर्म की रोशनी फैलाते गये। वह निर्भीक, ईश्वर विश्वासी, योगी, संन्यासी, संसार में बुराईयों, कुरीतियों, गुरुडम, ढोंगी महन्तो, सन्तों आदि के विरुद्ध अकेला चला, लड़ा और विजयी हुआ।

ऐसा देवपुरुष इतिहास में न मिलेगा, जिसने अपना सर्वस्व मानवता के कल्याण, उत्थान तथा मंगल में लगा दिया हो। अपने लिये न कभी कुछ चाहा, न मांगा और न संग्रह किया। जीवन भर जहर पीया, पत्थर खाये, अपमान सहा, बदले में अमृत लुटाता रहा। संसार के महापुरुषों में किसी न किसी प्रकार का कोई न कोई दोष रहा है। पवित्रात्मा ऋषि दयानन्द के जीवन में आदि से अन्त तक किसी प्रकार की सांसारिक त्रुटि तथा दुर्बलता न थी। हीरे के समान उनका जीवन सभी ओर से चमकता था। उन्होंने लोभ और भय को जीता हुआ था।

प्रसिद्ध एकलिङ्ग की गद्दी को ठुकराने में उन्हें एक

क्षण भी नहीं लगा। राजा ने कहा - स्वामिन् ! सोच लो, इतनी धनसम्पदा की गद्दी देने वाला तुम्हें कोई न मिलेगा। स्वामी जी ने एक क्षण भी नहीं लगाया और बोले - राजन् ! तुम भी सोच लेना, इतनी धन-वैभव की गद्दी को ठुकराने वाला तुम्हें कोई और फकीर भी न मिला होगा। यह उनके स्वभाव का प्रेरक उदाहरण है। वे चाहते तो अपार सुख-वैभव साधनों में जीवन गुजार सकते थे। मगर उस महायोगी ने जीवन भर अपने लिये कुछ चाहा नहीं ही। सांसारिक सुख-भोग, सम्पदा आदि उनके लिए तुच्छ थी।

जाति विद्वान मैक्समूलर से किसी ने पूछा- आप उन्नीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि, चमत्कार तथा उल्लेखनीय घटना क्या मानते है ? उन्होंने कहा - मैं इस शताब्दी का सबसे बड़ा चमत्कार व महत्वपूर्ण उपलब्धि यह मानता हूं - ऋषि दयानन्द का संसार के सामने वेदों का यथार्थ स्वरुप प्रस्तुत कर देना। वेदों का आम जनता से सम्बद्ध जोड़ देना। वेदों को पढ़ना-पढ़ाना का सभी को अधिकार है, इस मान्यता को स्थापित करना जिसे महाभारत के पश्चात् अन्य कोई नहीं दे सका। यह निर्विवाद सच है कि ऋषि दयानन्द ने वेदोद्धार किया है। उन्होंने संसार को संदेश दिया है कि वेदों की ओर लौटो। मेरा नहीं वेदों को मानो।

वेद ज्ञान परमेश्वर का आदेश, उपदेश तथा संदेश है। वेद सबके लिये और उसे सबको पढ़ने का अधिकार है। वेद ज्ञान ही आज के जीवन और जगत् को विश्व शान्ति, विश्वबन्धुत्व एवं मानवता की शिक्षा तथा प्रेरणा दे सकता है। **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है,** इस सत्य को स्थापित करने का कारण ऋषि सदा अमर रहेंगे। स्वामी जी ने संसार को वेदज्ञान के बारे में वैज्ञानिक सोच व दृष्टि दी है। यह अपने में महान् योगदान है। वेदों के बारे में तरह-तरह की फैली भ्रान्तियों का तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक अर्थ देकर उत्तर दिया। ऋषि ने स्पष्ट किया है कि -भूत-प्रेत, फलित ज्योतिष, ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव, पशु बलि, मांस-मदिरा का सेवन आदि कल्पित बातों का वेदों से कोई सम्बन्ध नहीं है। बाद में मध्यकाल में इन मिथ्या बातों का वेदों में मिलावट की गई।

संसार के ऊपर ऋषि दयानन्द के प्रत्येक क्षेत्र में अनन्त उपकार है। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिस पर उन्होंने सत्य, यथार्थ, प्रेरक और व्यवहारिक प्रकाश न डाला हो। स्वयं गृहस्थी न होते हुए भी उन्होंने संसार को मानव-निर्माण की कुंजी **"संस्कार विधि"** दी। संस्कारों से ही आचार-विचार एवं जीवन का निर्माण होता है। आज मानव समाज में तेजी से संस्कारहीनता फैल रही है। इसी कारण सच्चे अर्थ में मानव-मानव नहीं बन पा रहा है। जब तक मानवीय गुणों से युक्त मनुष्य नहीं बनेगा, तब तक धरती पर सुख-शान्ति, प्रसन्नता, सन्तोष, भाईचार आदि नहीं होगा।

पता : गोविन्दराम आर्य एंड संस, १८० महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७०००০৩

-: आवश्यक सूचना :-

अवगत हो कि सभा के अन्तरंग बैठक दिनांक 22-6-2014 को यह निर्णय लिया गया कि **आगामी वार्षिक साधारण सभा की बैठक तुलाराम आर्य कन्या उ.मा. विद्यालय सभागार, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) में दिनांक 21 सितंबर 2014 (रविवार)** को आहूत की गयी है, जिसमें आपके आर्यसमाज के मान्य प्रतिनिधिगण अनिवार्य रुप से उपस्थित रहेंगे।

ज्ञात हो कि बहुत कम आर्यसमाजों को छोड़कर, अधिकांश आर्यसमाजों से वर्ष 2013-14 का वार्षिक वृत्तांत एवं दशांश राशि, जो कि अप्रैल 2014 में प्राप्त हो जाना था, तीन माह व्यतीत हो जाने के बाद भी, आज दिनांक तक सभा कार्यालय दुर्ग में अप्राप्त है।

अतः जिन आर्यसमाजों ने नहीं भेजा है, दशांश राशि एवं अग्निदूत मासिक मुख-पत्र का वार्षिक शुल्क 100/- के साथ जमा करने की कृपा करें।

आर्यसमाज के नियम-उपनियम एवं सभा नियमावली अनुसार प्रत्येक आर्यसमाज के पास - सदस्यता रजिस्टर, कार्यवाही रजिस्टर, साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति रजिस्टर, कैश बुक (आय-व्यय लेखा रजिस्टर) अनिवार्यतः अद्यतन करते हुए, रहना चाहिए, ताकि सभा पदाधिकारी के द्वारा आपके आर्यसमाज के निरीक्षण अवसर पर, उपलब्ध हो सके।

सभा मंत्री, दीनानाथ वर्मा

कैंची की तरह काटना नहीं, सुई की तरह सीना सीखो

सकारात्मक

- कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दुनियां में तरह तरह के लोग होते हैं, १. जिनके जीवन से सुगन्ध निकलती है, यह उनके पुण्य कर्मों की कीर्ति है। वह इस समाज में सुई की तरह परिवारों को, समाज को सीने का कार्य करते हैं। २. जिनके जीवन से सुगन्ध निकलता है यह उनके पाप के फल हैं। उनका स्वभाव कैंची की तरह काटना होता है। वह मूर्ख लोग उठते बैठते, चलते फिरते दूसरों के दोष देखते रहते हैं और उन दोषों के आधार पर कैंची का स्वभाव बनाते हुए दूसरों को काटते रहते हैं। परिवारों और समाज के विखण्डन में आनन्द लेते हैं, क्योंकि वे इस विश्व की कामनाओं के जाल में फंसे रहते हैं। ऐसा व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ की चिन्ता करता है दूसरों को हानि पहुंचाने में निन्दा करने में आनन्द का अनुभव करता है। वह थोड़ा सा दुख आने पर अपने आप को संसार का सबसे बड़ा दुखी व्यक्ति समझने लगता है। जरा सा सुख आने पर इतना उछलता है कि उसे अपने समान कोई सुखी नहीं लगता। वह अहंकार में लिप्त हो जाता है ऐसा व्यक्ति स्थित प्रज्ञ नहीं होता। उसका स्वभाव सुई की तरह दिलों को जोड़ने में नहीं, कैंची की तरह दिलों को तोड़ने, दुखाने में लगा रहता है। परन्तु वह मूर्ख व्यक्ति यह नहीं जानता दर्जी सुई को सदा टोपी या कमीज की जेब पर लगाता है और कैंची सदा दर्जी के पैरों के पास पड़ी रहती है। जोड़ने वालों का सदा सम्मान होता है तोड़ने और काटने वाले कुछ समय के लिए चाहे अपने मन में खुश हो ले परन्तु अन्ततः उन्हें अपमानित होना पड़ता है। अतः बन्धुओं! कैंची की तरह काटना नहीं सुई की तरह सीना सीखो।

भगवान को पाना कठिन नहीं है। एक तरफ से हटाओ, अपने आप को दूसरी जगह से जोड़ दो। पर ध्यान रखना एक तरफ से सावधानी से उखाड़ना होगा, ऐसा न हो कि जड़ तो वहीं रह जाये और पौधा बाहर, तो न इधर के रहोगे न उधर के। संसार की मिट्टी से उखड़ कर स्वर्ग की मिट्टी में अपने आपको जोड़ना है बहुत सम्भाल कर जोड़ना होगा। बुल्लेशाह से किसी ने पूछा, **"भगवान को पाने के लिए क्या करना चाहिए ?"** तो बुल्लेशाह ने कहा, बुल्लैया, रब दा की पावंड़ा - ऐथों उठाणां, उथों लांवड़ा। जैसे पौधे को माली उखाड़ता है और दूसरी तरफ जाकर लगा देता है ऐसे ही मन को तुम इस संसार से हटाओ और परमात्मा में जोड़ दो, परमात्मा मिल जाएगा। कितना सरल रास्ता बताया, परन्तु इसके लिए आवश्यक है योगी को आत्म प्रशंसा से दूर हटना होगा। जब योगी विभूतियां प्राप्त कर लेता है तो संसार के लोग उनकी प्रशंसा करने लगते हैं उनके मान सम्मान में पलकें बिछाने लगते हैं, उन्हें महाराजधिराज, १००८ और न जाने किन-किन पदवियों से अलकृत करने लगते हैं। यदि योगी इसमें फंस गया तो उसका पतन निश्चित है। वह पुनः उसी लोभ में चला जावेगा। इसलिए योगी को इन प्रशंसाओं से मुक्त होना होगा। वह इन चिकनी चुपड़ी बातों को अनसुना कर दें, सुख दुख में एक सा रहे अपने 'मैं' से प्रभावित न हो, तभी यह योगी कैवल्य की ओर बढ़ सकता है।

जीवन की ऊंचाईयाँ प्राप्त करने के लिए हमें इस साधना से गुजरना चाहिए। हमें ऊंचाईयों पर चढ़ते चढ़ते प्रतिदिन अपने आपको टटोलना चाहिए कि मुझे अहंकार तो नहीं हो गया। अपना परीक्षण प्रतिदिन करो यह चिन्तन करो। कि मैंने अपनी 'मैं' का कितनी बार प्रयोग किया। 'मैं' ध्यान रखूं कि कल मेरी मैं समाप्त होनी चाहिए। धीरे धीरे अभ्यास से 'मैं' समाप्त होती चलेगी और 'मैं' के स्थान पर तू आती जावेगी। यही सच्ची समाधि है।

बच्चों की तरह बनकर रहोगे तो सुख पाओगे -

बच्चा पैदा होता है तो वह परमात्मा का सन्देश लेकर आता है कि ऐ दुनियां के लोगो। तुम प्यार भी करते हो, घृणा भी करते हो। परन्तु प्यार बांटना सीखो, घृणा नहीं। देखो ! हम दो बच्चे आपस में आज लड़ रहे हैं, उसी समय हमारी मातायें आ गई। उन्होंने अपने अपने बच्चे का पक्ष लेते हुए

आपस में दुश्मनी पाल ली । परन्तु दूसरे दिन एक दूसरे को क्षमा करते हुए फिर इकट्ठे खेलना शुरु कर दिया है । इसी प्रकार तुम भी हमारी तरह बच्चे बन कर देखो एक दूसरे के साथ शत्रुता पालने की बजाय, भूलना सीखो । मित्रता करना सीखो, तभी यह संसार दुखों के सागर के स्थान पर सुखों एवं अमृत का झरना बन जायेगा ।

पुण्य कर्म करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है । जो सच्चे और धार्मिक हैं वह अपने इकरारों पर अटल रहते हैं । उन्हें कोई बड़े से बड़ा प्रलोभन पथ भ्रष्ट नहीं कर सकता, क्योंकि वह स्थित प्रज्ञा होते हैं । उनमें किसी प्रकार का कामनाओं का जाल नहीं होता । वह ज्ञानी बनकर एक सन्यासी, एक सन्त का जीवन जीने वाला हो जाता है । भले ही वह किसी वेश में रहे, किसी भेष में रहे, किसी परिवेश में रहे, किसी भी स्थिति और परिस्थिति में रहे, वह अन्दर से जागृत होता है । ऐसे व्यक्ति के विषय में अर्जुन कृष्ण से पूछता है, वह स्थित प्रज्ञ व्यक्ति किस भाषा में बोलता है ? उसका व्यवहार कैसे होता है ? तब अर्जुन की जिज्ञासा को शान्त करते हुए कृष्ण कहता है कि ऐसे स्थित प्रज्ञ व्यक्ति की वाणी और शब्दावली अपने में अनोखी होती है । ऐसा व्यक्ति अपने में केन्द्रित न होकर समष्टि का अंग बन जाता है । वह कामनारहित सम्राट बन जाता है । उसका मन अन्दर से सन्तुष्ट होता है । वह इतना समृद्ध हो जाता है कि बाहर की धन दौलत और समृद्धि उसके सम्मुख नगण्य हो जाती है । वह एक ऐसे आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है, जिसका कोई अन्त नहीं है ।

अतः आत्म प्रशंसा से दूर हटते हुए बच्चों की तरह सरल, सुई की तरह समाज को जोड़ते हुए, एक घर को छोड़ते हुए दूसरे घर में प्रवेश करते हुए, पिछले घर का मोह न करते हुए और अगले में आसक्ति न करें तभी हमारा कल्याण होगा। अतः सुई की तरह सीना सीखें, कैंची की तरह काटना नहीं । यही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए ।

पता : ४/४५ शिवाजीनगर गुड़गांव, हरियाणा

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा

का संदेश देता भ्राता-स्वसा का स्नेह पर्व रक्षाबन्धन भारतीय संस्कृति के मानवीय जीवन मूल्यों के संरक्षण के प्रति संसार को प्रेरित करता है । रक्षा बन्धन का अति प्राचीन इतिहास नहीं किन्तु यह सांस्कृतिक पर्व लोक में बहुप्रचलित है । यह पर्व माता-पिता, भ्राता, भगिनी, मित्र, प्रतिवेशी आचार्य सबको यह बताता है कि हमें अपने संबन्धों की रक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिए । धर्म ही संपूर्ण प्रजा संबन्धों को रक्षित किया है । अतः यह वैदिक संस्कृति और धर्म का पावन संदेश है ।

विश्व-संस्कृत-दिवस (श्रावणी पूर्णिमा)

प्रत्येक कार्य का आरम्भ लघु होता है फिर वह महान् होता जाता है । इस दृष्टि से विश्व संस्कृत दिवस का लघु रुप व्यक्ति संस्कृत दिवस, फिर ग्राम-संस्कृत दिवस, जिला संस्कृत दिवस, प्रान्त संस्कृत दिवस, राष्ट्र संस्कृत दिवस अन्त में विश्व संस्कृत दिवस का क्रम होता है । किन्तु यह उतावलापन क्यों ? लगता है कि संस्कृत बोलने में झिझक महसूस हुई इसलिए विश्व को संस्कृतज्ञ लोग अपने साथ समेटने के लिए विश्व संस्कृत दिवस मनाया जा रहा है । यह तो बिलकुल सत्य है, **"एकोऽहं बहुस्याम्"** न्याय से अकेला संस्कृत चिन्तक, वक्ता, श्रोता होने से काम नहीं चलने वाला, व्यक्ति, ग्राम, जिला, प्रान्त, राष्ट्र और विश्व की ओर अग्रसर होना पड़ेगा, रेखाचित्र बनाकर उसमें विविधाकृति बनाकर रङ्ग बनाना पड़ेगा। श्रवणा नक्षत्र जिस पौर्णमासी को पड़े वह **"श्रावणी पूर्णिमा"** है । नक्षत्र का नामकरण परमात्मा ने वेदों के श्रवणार्थ ही किया है । श्रावण मास से माघ मास तक वेदों का स्वाध्याय जोरों पर किया जाता रहा है । इसीलिए बहुधा चिन्तन करके श्रावणी पूर्णिमा को विश्व संस्कृत दिवस घोषित किया गया है ।

- सम्पादक

छत्तीसगढ़ के वैदिक मिशनरी - स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती 'आटा' नामक गांव में आर्य सेनानी रघुवर दयाल की धर्मपत्नी पराधणा पतिव्रता पत्नी रामप्यारी के गर्भ से **१५ अगस्त १९०६** को हमारे चरित्रनायक का अवतरण हुआ। समयानुसार बालक का नामकरण संस्कार कराया गया और पिता ने उसका 'माता प्रसाद' रखा। तब कौन जानता था कि माता का यह प्रसाद ही आगामी जीवन में दिव्य-आनन्द से पूर्ण, राष्ट्र और धर्म का महान् सेवक होगा ?

आगे चलकर इस सात्विक धर्मनिष्ठदम्पती की दो पुत्रियां भी हुई। माता-पिता के एकमात्र पुत्र एवं दो बहनों के लाडले भा माता प्रसाद हृष्ट-पुष्ट, गौरवपूर्ण एवं कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। कम पढ़ी-लिखी किन्तु सन्तान निर्माण के लिये संचेत माता रामप्यारी अपने प्रियपुत्र को सुसंस्कृत करने लगी। फौजी अनुशासन तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों से प्रभावित पिता अपने प्राणप्रिय पुत्र को सर्वविधगुणों से सम्पन्न करने में लग गये। खेल-खेल में माता प्रसाद को सत्यार्थ प्रकाश की सीख दी जाने लगी। पांच वर्ष की अवस्था तक पिता ने गायत्री मंत्री और संध्या के कुछ मंत्र रटा दिये साथ ही मनोरंजक ढंग से लिखना-पढ़ना भी सिखाया। वेदारंभ तथा यज्ञोपवीत संस्कार के साथ बालक माता प्रसाद विद्यालय में प्रविष्ट हुए।

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ आगमनम्

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के अधिकारी वृन्द उच्चकोटि के उपदेशक का अभाव महसूस कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली जाकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान पूज्यपाद स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती से एक महोपदेशक को मध्यप्रदेश भेजने के लिये अनुरोध किया। पूज्य प्रधान जी ने अनुरोध स्वीकार कर स्वामी दिव्यानन्द सस्वती को मध्यप्रदेश में वैदिक नाद गुंजाने प्रेरित किया। गुरुदेव की प्रेरणा को शिरोधार्य कर स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज १९५१ में मध्यप्रदेश व विदर्भ पधारे। आर्यावर्त भारत के हृदय स्थल में अवस्थित मध्यप्रदेश व विदर्भ क्षेत्र सर्वथा पिछड़ा हुआ और अविकसित था। अज्ञान-अंधकार की घटाटोप बादल से घिरा यह प्रदेश शिक्षा क्षेत्र में भी पिछड़ा हुआ था। ऐसे प्रदेश में वैदिक धर्म का प्रचार करना लोहे के चने चबाने के समान था। किन्तु हमारे स्वामी भी सामान्य नहीं थे। महान् चिन्तक, तार्किक और सामयिक थे। योगाभ्यासी और वेद के परमभक्त थे। चुनौतियों से स्फूर्ति पाने वाले स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती पीछे हटने वाले नहीं थे। मध्यप्रदेश में वेदवाणी का गुंजार आरंभ किया। थोड़े दिनों में समूचे प्रदेश को उन्होने आत्मसात् कर दिया। प्रभाव इतना पड़ा कि एक ही वर्ष में आर्य प्रतिनिधि सभ म.प्र. व विदर्भ के आजीवन सदस्य स्वीकार कर लिये गये। तत्कालीन सभा प्रधान श्री घनश्यामसिंह गुप्त, स्वामी जी को विद्वत्ता, नम्रता और तेजोमय आभा से अत्यधिक प्रभावित हुए उनसे अनुरोध कर उन्हें वेद प्रचार अधिष्ठाता के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। सचमुच निष्पक्ष जौहरी ही रत्नादि को सही पहचान पाते हैं। श्री गुप्त जी ने सही व्यक्ति को सही पद पर अधिष्ठित कर अपने को ही धन्य किया, अन्यथा तो रेवड़ियाँ बांटने वाले सत्ताधीश, अपने ही चाटुकारों, पाखंडियों अथवा आत्मश्लाघा में रत हिरण्यकश्यपों के कुतर्कों का सामना कर सुदूर गांव देहातों में वेद ही की बात कहने वाले वेदप्रचार अधिष्ठाता होने के योग्य होते हैं। स्वामी दिव्यानन्द जी उस पद के लिये नहींआये थे, अपितु उस पद का सृजन उनके लिये हुआ था। स्वामी जी महाराज की व्याख्यान शैली बड़ी निराली और हृदयग्राही थीं। उनके अन्तस् से निकले शब्द, श्रोता के रोम-रोम को पुलकित कर देते थे। वेद, दर्शन एवं उपनिषदों पर पूर्ण अधिकार पूर्वक वैदिक सिद्धान्तों के मर्म को साधारण जनता के सामने इतनी मनोहारिणी कथा के माध्यम से प्रस्तुत करते कि जनता सुनकर आत्म विभोर हो उठती थी। जन जीवन के लिये उनके उपदेश संजीवनी के समान जीवन दायक होते थे। वे इतने प्रभावी होते थे कि इनसे सर्वथा अनजान और अपरिचित व्यक्ति भी इनके प्रथम दर्शन व श्रवण से इनके ही हो जाते थे। छत्तीसगढ़ में १०० गांवों में आपको पथ प्रदर्शक मानने वाले आज भी विद्यमान है।

– डॉ. कमलनारायण वेदाचार्य, रायपुर

आबुधाबी (यू.ए.ई.) में आचार्य ज्ञानेश्वरार्य द्वारा वेदप्रचार

पाती परदेश की

- ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।
- अनेक आर्य सज्जनों के आमन्त्रण पर जून १९, १४ को यहां पहुंचा खाड़ी देशों की यह मेरी दूसरी यात्रा है। यहां मैं आर्य परिवारों को सांख्य दर्शन का अध्यापन, ध्यान, प्रवचन, शंका-समाधान करता हूँ। जब भी अवकाश मिलता है, आस पास के देशों में भ्रमणार्थ जाता हूँ। दुबई देश में रहते हुये मैंने आबुधाबी, शारजाह अजमान फुजैराह, रस अल खैमाह आदि सात देशों की यात्रा की है। मुझे बहुत कुछ नया ज्ञान, विज्ञान, प्रत्यक्ष देखने, सुनने, पढ़ने को मिला, यह मेरी १९वीं विदेश प्रचार यात्रा है।
- बीसवीं शताब्दी के मध्य तक इन खाड़ी देशों में, खारे समुद्र, रेत के टीलों, गर्म धुल भरी हवाओं के सिवा कुछ भी नहीं था। अत्यन्त प्रतिकूल प्राकृतिक विपन्न जलवायु में ये कैसे जीते थे, यह कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेकिन आज वहीं पर अत्याधुनिक तथा विशाल ५०-८०-१०० मंजीले आकर्षक भवनों को देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है, मन में विचार होता है कि कहीं स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं, कोई जादू तो नहीं है !!! वास्तविकता यह है कि यह सब मन में किसी उद्देश्य को बनाकर उसको पूरा करने हेतु प्रबल भावना, दृढ़ संकल्प, परम पुरुषार्थ तथा घोर तपस्या का परिणाम है।
- मैंने सुना कि यहां के (शेख) राजा, जब अमेरिका, यूरोप आदि देशों की यात्रा करते हुये वहां की भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त सब प्रकार की उन्नति देखते थे तो उनके मन में यह विचार उत्पन्न होते थे कि क्या मेरे देश में ऐसे भवन, चौड़ी सड़के, यातायात के साधन, होटल, रिसोर्ट, क्लब, बाग, बगीचे, मनोरंजन के साधन, व्यापार मण्डी, सुख-सुविधाएँ बनायी जा सकती है, जिनके कारण लोग आकर्षित होकर आवें, रहें ?
- बस एक दिन संकल्प कर लिया, योजनायें बनायी गई, अमेरिका, यूरोप, एशिया के देशों से सम्पर्क किया, मंत्रणा हुई, अनुबन्ध हुवे, लोहा, सीमेंट, पत्थर, लकड़ी, इंजीनियर, श्रमिक आदि जिन जिन साधनों की अपेक्षा थी, प्राप्त किये गये। कार्य प्रारंभ हो गया, शेख के मन में एक ही भावना कि कोई भी निर्माण हो, अद्भुत, अद्वितीय आकर्षक होना चाहिए। समुद्र में मीलों तक पत्थर, कंकर, रेत डालकर, पहाड़ बनाकर उन पर आकाश को छूने वाली, ऊंची, भव्य इमारतें बनायी गयी और सुन्दर नगर बसाया गया। दूसरी तरफ भूमि में गहरी खाईयां खोदकर समुद्र के पानी को नहरों के रुप में फैला दिया गया। अन्य देशों से जहाजों में उपजाऊ मिट्टी मंगाकर, रेत के मैदानों में बिछाकर, बड़े-बड़े, उद्यान, खेत, बगीचे, उपवन, वाटिकाएं बना दी। जहां घास का एक तिनका नहीं उगता था वहां पर रंग-बिरंगे, फूल-फल घास के मैदान बना दिये। बसों, रेल, ट्रामों भण्डारों आदि की समुचित व्यवस्था करके सर्वत्र आवागमन को सरल बना दिया।
- कृत्रिम रुप से बने सभी साधन सुविधाओं से युक्त उत्तम व्यवस्था, कुशल प्रबन्ध, अनुशासन, दण्ड व्यवस्था के कारण विश्व के १०० से भी अधिक देशों के नागरिक यहां अनेक प्रकार के व्यवायों में लगे हुये हैं। अमीरात के देश विश्व का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं पर्यटन का केन्द्र बन गया है। इन देशों के मुख्य नगरों में घूमते हैं, तो यह भ्रम हो जाता है कि कहीं हम लंदन, पेरिस, टोक्यो, सिंगापुर में तो नहीं है ?
- इन देशों के वैभव, सम्पदा, विकास, उन्नति को देखकर वही प्रश्न मन में उपस्थित होता है कि ये देश अत्यन्त प्रतिकूल वातावरण, जलवायु तथा विपन्नता के होते हुये, कुछ ही वर्षों में देश को स्वर्ग के समान सम्पन्न सुन्दर बना सकते हैं, तो हम क्यों नहीं ? जहां पर हर प्रकार की प्राकृतिक सम्पदा, साधन, अनुकूलता हो। जिस देश में शिल्प, कला, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, आचार-विचार, व्यवहार, सिद्धान्त तथा श्रेष्ठ गौरवमयी आदर्श परम्परायें हजारों-लाखों वर्षों से चली आ रही है, वह उन्नत क्यों नहीं हो रहा है ? इन देशों के समक्ष हमारे इस आर्यावर्त की ऐसी दुदर्शा क्यों है ? हमारे देश के अधिकांश लोग और उनका जीवन दयनीय, निकृष्ट, विपन्न, घृणित तुच्छ, हेय क्यों है ? हम चाहते ही नहीं, चाहे तो हो सकता है।
- विश्व का भ्रमण करने के पश्चात मेरी समझ में यही आया है कि हमने उन्नति की सीमा व्यक्ति या परिवार तक बना ली है। हमारे नगर, राज्य, राष्ट्र का नाम विश्व में हो, हमसे लोग प्रेरणा लें, सीखें, अनुकरण करें, यहां आवे, हमारा सम्मान करें, ये विचार कभी भी मन में उठते नहीं है तो कार्य क्या होगा। हे देव हमारे देशवासियों की दयनीय दशा से उबरकर, सम्पन्न बनने की प्रेरणा आप ही प्रदान करो। हम अपनी लुप्त हुई गरिमा को पुनः जीवित करके, विश्व गुरु बनकर, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के आपके वेद उद्घोष को साकार करें, यही प्रार्थना है स्वीकार करें।

- आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

इस्लामिक देश मलेशिया से आचार्य आनन्द पुरुषार्थी की एक चिट्ठी

सभा आर्यप्रवर, सादरं नमस्ते, ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु।

अपनी आठवीं विदेश यात्रा के दूसरे चरण में सिंगापुर से ६ घंटे की बस यात्रा कर दोपहर २ बजे हम क्वालालामपुर पहुंचे। मलेशिया कोलकाता से २६०० कि.मी. तथा सिंगापुर से २५० कि.मी. है। यह देश चीन सागर की मध्यस्थता में पूर्वी व पश्चिमी मलेशिया के रुप में विचित्र रुप से विभाजित है। पश्चिमी मलेशिया थाईलैंड की सीमा को स्पर्श करता है तो पूर्वी मलेशिया इंडोनेशिया व ब्रूनेई को। सिंगापुर को एक पुल व राजमार्ग से जोड़ लिया है तथैव वियतनाम व फिलीपींस इंडोनेसिया की समुद्री सीमायें भी निकतम है। मलेशिया का क्षेत्रफल ३२९८४७ वर्ग कि.मी. है, जो आंध्रप्रदेश व पंजाब के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर है। इसमें १३ राज्य ३ संघ प्रदेश व ९७ जिले हैं। मलयाचल के निवासियों द्वारा बसाया गया होने से व सिंगापुर के कुछ वर्ष साथ रहने से इसका नाम मलेशिया हो गया।

शताब्दियों से अत्रस्थ आदिवासी विकृत पौराणिक पूजा पद्धति को मानते रहे। १४वीं शताब्दी में इस्लाम की विचारधारा पहुंची। जोर जबरदस्ती व विवशता से ये उसके रंग में रंगते चले गये। १७ वीं शताब्दी में पुर्तगालों का आक्रमण हुआ तो अठारहवीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी ने कुटिल नजर डाल दी। द्वितीय विश्व युद्ध में ३ वर्षों तक सिंगापुर सहित यहां पर भी जापान का कब्जा रहा पर पुनः अंग्रेजों ने इसे जीत लिया। चीनी व भारतीय मजदूरों को अंग्रेजों ने यहां सप्लाई किया उनकी ही पीढ़ी संप्रति यहां की स्थायी निवासी बन गई है। कुछ प्रदर्शनों व अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के चलते बिना किसी बलिदान के मलेशिया को ३१ अगस्त १९५७ को अंग्रेजों ने स्वतंत्र कर दिया था। यह एक विकसित राष्ट्र है। जनसंख्या ३ करोड़ १८ लाख है। मूल निवासी मलय (मुस्लिम) ६२%, बौद्ध २०%, ईसाई ९%, हिन्दू ७% व अन्य है। ३० लाख प्रवासी कर्मचारी कई देशों से आकर सेवारत है। वर्मा, फिलीपीन्स, इण्डोनेशिया आदि देशों से २ लाख से ज्यादा घुसपैठ होने से चोरी, लूट की घटनायें यहां घटती रहती है। यहां की मुद्रा को टिंगित आरएम कहते है जो भारत के २०/- के बराबर है। भारत से ढाई घंटे पूर्व यहां सूर्योदय होता है। राजा का चयन नौ राज्यों के पारंपरिक शासक करते हैं। नागरिकता मिलना अत्यन्त कठिन है पर पर्यटन या नौकरी हेतु बीसा सरलता से मिल जाता है। यहां की २ राजधानी है क्वालालामपुर (विधायिका) पुत्रांजया (कार्यपालिका) भूमध्य रेखा पर होने से इसे वर्षा वन कहते हैं। लगभग पूरे वर्ष बारिश होती है। ठंड नहीं पड़ती उमस व आर्द्रता बनी रहती है। मुस्लिमों को अधिक संतान पैदा करने पर शिक्षा, चिकित्सा, धन आदि सुविधा मिलती है। हद्द कानून (शरीयत) दो विधानसभाओं ने पारित कर दिया है पर बौद्ध व हिन्दू विरोध कर रहे हैं क्योंकि आगे इससे अल्पसंख्यकों पर दबाव पड़ेगा। मलेशिया तेल उत्पादन में विश्व का चौथा देश है अतः पेट्रोल ४० रु. व डीजल ३५ रु. है, पर कारे महंगी है। यहां के लक्ष्मीनारायण मंदिर की व्यास पीठ में हमें वेद विषयक तीन प्रवचनों का सुअवसर प्राप्त हुआ। हमने वेदों की विषय वस्तु, १६ संस्कार व आदर्श मार्गदर्शकों के अनुकरण पर चर्चा की। हिन्दी जाति की वर्तमान समस्याओं हेतु संतानों को संस्कारित करने व वानप्रस्थ का सुझाव दिया। इसी मंच से सायं प्रख्यात पौराणिक विद्वान् श्री रमेश भाई ओझा जी (गुजरात) का प्रवचन हुआ। हमने सत्यार्थ प्रकाश सहित कुछ वैदिक साहित्य आपको भेंट किया। संस्कृत में वार्तालाप के दौरान जब हमने बताया कि आपके नगर पोरबंदर के एडव्होकेट बार काऊंसिल में हम न्याय विषय पर वकीलों को व्याख्यान दे चुके हैं तो आपको सुखद आश्चर्य हुआ और आपने हमें अपने आश्रम में आमंत्रित किया।

हमने भी पूर्व में आपको होशंगाबाद गुरुकुल आमंत्रित किया। मंदिर के मुख्य पुरोहित पं. दिनेश जी शास्त्री

को योगदर्शन के प्रथम व दूसरा पाद का अध्यापन किया। व्यास भाष्य भी आवश्यक होने पर पढ़ाया। आपके छोटे पंडित व धर्मपत्नी भी कक्षा में बैठी। अपने शिष्य प्रिय पीयूष जी इंजी. के घर यज्ञ किया दम्पति व मित्रों को वैदिक धर्म की वृद्धि हेतु टिप्स दिये। मंदिर के पुस्तकालय हेतु बहुत सारी पुस्तकें भेंट किये। मलेशिया के ईपोनगर में १९४२ में आर्यसमाज स्थापित हुआ था पर शाखा वृक्ष से दूर हो तो सुख जाती है। राजधानी से २०० कि.पी. दूर हमने पता लगाकर उन्हें सार्वदेशिक सभा से जुड़ने का आग्रह किया। १, २ नवम्बर को सिंगापुर आर्यसम्मेलन में आमंत्रित किया। कुछ टिप्स दिये। आप मंदिर के पुनर्निर्माण का यत्न कर रहे हैं। फिजी के बाद ये दूसरा देश को उद्यत हुए हैं। दर्शनीय स्थलों में के.एल. टावर (ऊंचाई ४२० मीटर), ट्वीन टावर (जुड़वा इमारते) म्यूजियम, २०० में सी लायन द्वारा वास्केट बाल खेलना अन्य आज्ञा पालन, सैकड़ों जीव, तितलियों, सांपो व मधुमक्खी का संसार, ६ डी मूवी में जंगल की सैर, कार्तिकेय जी की १४० फीट की प्रतिमा, गुफायें, समुद्र तट, बौद्धों व हिन्दुओं के मंदिर, कुछ प्रसिद्ध मस्जिदें, सुल्तान अब्दुल समद भवन प्रमुख है।

- आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी

हौसला

जिन्दगी अगर दरिया है तो
तूफान बनकर आगे बढ़ जा तू
जिन्दगी तूझे पत्थर मारती है तो
पत्थर को सीढ़ी बनाकर चढ़ जा तू
जिन्दगी अगर अंधेरी रात है तो
रोशनी के लिए खुद को जलाले तू
जिन्दगी चाहती है तेरे आगे
आशमाँ झूक जाए तो खुद को मिटा दे तू
जिन्दगी अगर युद्ध का मैदान है तो
आगे बढ़कर अड़ जा, लड़ जा तू
जिन्दगी की धारा विपरीत चिरकर
बाजुओं का दम दिखा जा तू
इन चुनौतियों को स्वीकार कर
मौत को झुका जा तू

रचयिता : प्रभात कुमार, ८९६२४३९२७९

तमसो मा ज्योतिर्गमय

असतो मा सद् गमय, तमसो मा
ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय ।।

(बृहदारण्यक)

भावार्थ :- हे प्रभो ! परम पूज्य देव ! मुझे असत्य से दूर कर सत्य की ओर प्रेरित कीजिये। मुझे अन्धकार से हटाकर प्रकाश का मार्ग बतलाइये। मुझे अपूर्णता (मृत्यु) से बचाकर पूर्णता (अमृतत्व) के पथ की ओर अग्रसर कीजिये। उपनिषदों का अमृतमय ज्ञान भारत वर्ष की वह निधि है, जिसने संसार की आध्यात्मिक पिपासा शान्त की है।

- सुभाषित सौरभ

शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियान् जातानेवम् तु विद्याद्वैश्यान्तथैव च।।

आरोग्य

होमियोपैथी के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

होमियोपैथी दुनिया भर में एक जानी मानी चिकित्सीय पद्धति है। इस पद्धति में मानसिक लक्षणों और रोग के लक्षणों के आधार पर चिकित्सा की जाती है। होमियोपैथी में रोगी की स्थिति पर लगातार नजर रखते हुए सावधानी पूर्वक इलाज किया जाता है। होमियोपैथी चिकित्सा के कुछ मूलभूत बातें निम्न है :-

- किसी भी बीमारी की चिकित्सा करते समय रोगी के धातुगत लक्षण, मानसिक लक्षण और रोग के लक्षणों के साथ जिस दवा के लक्षणों (Majority of symptoms) सबसे अधिक मेल खाता हो, उसी दवा का प्रयोग सर्वप्रथम करना चाहिए।
- इस चिकित्सा पद्धति में धैर्य और गहन अनुभव की जरुरत होती है।
- होम्योपैथिक दवाएं रोगी के जीवनी शक्ति को उत्प्रेरित कर उसे रोग से मुक्ति दिलाती है।
- होम्योपैथिक दवाएं विश्व की सभी चिकित्सा पद्धति से सस्ती एवं निरापद है।
- पुराना से पुराना रोग भी होमियोपैथी चिकित्सा से समाप्त किया जा सकता है।
- होम्योपैथिक दवाएं बिल्कुल हानिरहित और बिना साइड इफेक्ट के रोग को जड़ से समाप्त करने में सक्षम है।
- होम्योपैथिक में रोग प्रतिरोधक दवाएं भी उपलब्ध है जो हमारे शरीर को रोगप्रतिरोधी बना देते हैं।
- होम्योपैथिक में बीमारी के आधार पर नहीं, मरीज के तन-मन की हालत को गहराई से देखकर ही इलाज किया जाता है।
- होम्योपैथिक में रोग का नहीं रोगी का इलाज किया जाता है। इसके लिए रोगी के शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत किया जाता है ताकि वह खुद ही बीमारी से लड़ सके।
- कोई नयी बीमारी, जैसे ज्वर, दस्त आदि में होम्योपैथिक दवाएं जल्द ही असर दिखाना शुरु कर देती है। जटिल पुरानी बीमारी की चिकित्सा में देर हो सकती है।
- दवा लेने से पहले मुंह को अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए, जीभ एकदम साफ होनी चाहिए क्योंकि होमियो दवाएं जीभ की नर्व से काम करती है। दवा की पहली खुराक खाली पेट लेना चाहिए।
- होम्योपैथिक दवा लेने के १५-२० मिनट पहले और बाद में कुछ भी खाना पीना नहीं चाहिए। दवा लेने के बाद कुछ देर शांतिपूर्वक रहें। दवा सेवन करते समय चूना, सोडा, लेमोनेड सिरका एवं सुंगधित पदार्थ का उपयोग न करें। खड़िया या तीते पदार्थों से दन्त मांजना भी वर्जित है। सुगंधित तेल, तेज गंध वाली जैसे प्याज, लहसुन, गरम मसाले, कपूर, शराब नशीले पदार्थ, चाय-काफी इत्यादि पदार्थों से बचे। पान-बीड़ी, गुटखा और सिगरेज से बचना चाहिए, क्योंकि इनका सेवन करने पर दवाएं कम असर करती है। यदि इनका सेवन करना जरुरी ह तो दवा लेने के एक घंटे आगे पीछे करें।
- होमियोपैथिक दवाएं रखने की जगह पर कपूर, युक्लिप्टस, नैप्थेलैन इत्यादि तीव्र गंध वाली चीजे नहीं रखना चाहिए। दवा की बाटल को धूप से भी बचाना चाहिए। होम्योपैथिक दवा का बक्सा रखने का कमरा साफ-सुथरा और उजालेदार होना आवश्यक है। यदि घर में चूना, गंधक आदि जलाने और फिनाइल से धोने की जरुरत हो तो दवा को दूसरे कमरे में हटा लेना चाहिए।
- होम्योपैथिक दवाएं तरल रुप होती है। इसे सफेद गोलियों या पाउडर के माध्यम से ली जाती है। दवा लेते समय गोलियों या पाउडर को हाथ के सम्पर्क में आने से बचाना चाहिए। मदर टिंचर दवा को पानी के साथ लेना चाहिए। चिकित्सा एक व्यवसाय नहीं वरन् पीड़ित मानवता की सेवा का एक महान कार्य है।

समाचार प्रवाह — आर्यसमाज सेक्टर-६ की नई कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न

भिलाई । आर्यसमाज सेक्टर-६, की अपनी २० जुलाई २०१४ को आयोजित साधारण सभा में नई कार्यकारिणी २०१४-१५ का गठन डॉ. एस. एन. आहुजा के नेतृत्व में किया गया । यह बड़े हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज ने अपनी परम्परा के अनुसार सभी पदों पर सर्वसम्मति के आधार पर गठन किया । तदनुसार श्री अवनीभूषण पुरंग **प्रधान**, श्री रवि आर्य **मंत्री** तथा श्री रविन्द्र गुप्ता **कोषाध्यक्ष** निर्वाचित हुए । इसके अलावा श्री सुदर्शन बहल एवं श्री जवाहरलाल सरपाल **उपप्रधान**, श्री अरुण ग्रोवर एवं श्रीमती प्रमिला सरपाल **उपमंत्री**, श्री यतीन्द्र पुरंग **पुस्तकाध्यक्ष**, श्री राजकुमार भल्ला **आर्यवीर दल अधिष्ठाता** और श्रीमती मधु गुप्ता **आंतरिक लेखा परीक्षक** निर्वाचित हुई ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रधान श्री अवनीभूषण पुरंग ने सभी सदस्यों का आभार प्रकट किया । मंत्री श्री रवि आर्य ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और कोषाध्यक्ष श्री रविन्द्र गुप्ता ने वित्त वर्ष २०१३-१४ का आय-व्यय विवरण तथा सत्र २०१४-१५ का बजट प्रस्तुत किया । महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन सचिव श्रीमती प्रमिला सरपाल तथा सत्र २०१३-१४ का आय-व्यय विवरण श्री प्रवीण गुप्ता ने प्रस्तुत किया । शांति पाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई ।

संवाददाता : श्री रवि आर्य, मंत्री आर्यसमाज सेक्टर-६, भिलाई

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग का निर्वाचन सम्पन्न

दुर्ग । आर्यसमाज मठपारा दुर्ग का वार्षिक निर्वाचन दिनांक २७ जुलाई २०१४ को वरिष्ठ आर्यसमाज श्री मोहनलाल चड्ढा (चुनाव अधिकारी) की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ । जिसमें संरक्षक गुलाबचंद वानप्रस्थी, **प्रधान** - श्री जे. आर. तलवार, **उपप्रधान** श्री हरीश बंसल व श्री के. एल. चौधरी, **मंत्री** - विनोद बिहारी सक्सेना, **उपमंत्री** श्री संतोष शर्मा, श्री सुजीत खरे, **कोषाध्यक्ष** - श्री विनीत श्रीवास्तव, **प्रचार मंत्री** - उमेश शर्मा, **आर्यवीर दल अधिष्ठाता** - आचार्य लोकनाथ शास्त्री, **पुस्तकाध्यक्ष** - सुश्री रेखा सालुके, **कार्यकारिणी सदस्य** - अनीता तलवार, ईश्वरी अग्रवाल, विजयलक्ष्मी दुबे, राजेन्द्र देवांगन, जयश्री गुप्ता, करुणा गौतम, बालकिशन लूथरा, अमित अग्रवाल, बरखा गुप्ता, जी.एस. ठाकुर, संबिका अग्रवाल । **छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा हेतु प्रतिनिधि** श्री जे. आर. तलवार, श्री हरीश बंसल, श्री विनोद बिहारी सक्सेना, विनीत श्रीवास्तव, श्री संतोष शर्मा चुने गए ।

संवाददाता : संतोष शर्मा, उपमंत्री आ.म.दुर्ग

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारियों एवं अग्निदूत परिवार की ओर से

स्वतंत्रता दिवस, रक्षा बंधन एवं कृष्ण जन्माष्टमी (श्रावणी पर्व) की हार्दिक शुभकामनाएँ.

"हास्यं सुध्युपास्यम्" केवल २०० रु. में उपलब्ध

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री की अभिनव कृति **"हास्यं सुध्युपास्यम्"** जिसकी समीक्षा अग्निदूत के विगत जून अंक में प्रकाशित की गई है तथा जिसका मूल्य ३०० रु. है । वह अग्निदूत के ग्राहकों के लिए एवं आर्यसमाज से संबद्ध सदस्यों को केवल २०० रु. में रजि. डाक से उपलब्ध हो सकेगी । इच्छुक सज्जन २०० रु. मनीआर्डर द्वारा भेजकर तथा निम्नलिखित प्रकाश से सम्पर्क कर घर बैठे ही पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं ।

पुस्तक प्राप्ति का स्थान : "अक्षयवर प्रंकाशन", २६, बलरामपुर हाऊस, इलाहाबाद, फोन : ०९४५२६७०३८३

जशपुर व रायगढ़ जिला के विभिन्न क्षेत्रों में वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज झक्कड़पुर वि.ख. पत्थलगांव जिला जशपुर में दि. १३ जून २०१४ को श्री कृतराम आर्य प्रधान एवं श्री बीरबल आर्य प्रचारक के ब्रह्मत्व में यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें यजमान के रुप में श्री कुवारसाय आर्य एवं श्रीमती शान्ती आर्या इसके अलावा श्री सुलोचन एवं श्रीमती दुनीबाई आर्या के निवास में भी हवन, सत्संग का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज पंगसुवा वि. खं. पत्थलगांव जिला जशपुर में दिनांक २४ जून २०१४ को वेदारम्भ संस्कार के उपलक्ष्य में यज्ञ, हवन, सत्संग का कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजमान के रुप में श्री अभयानन्द आर्य धर्मपत्नी श्रीमती जानकी आर्या, पुत्री कु.गीता आर्या उपस्थित थे। आशीर्वाद देने के लिए श्री शोभाराम आर्य, श्री धनेश्वर आर्य, श्री रामेश्वर आर्य, श्रीमती जम्बोबती आर्या परिवार सहित आसपास के ग्रामीण लोग उपस्थित रहे।

आर्यसमाज पत्थलगांव जिला जशपुर में दिनांक २६ जून २०१४ को श्री चिन्तामणी दीक्षित झांसी हिसार हरियाणा के ब्रह्मत्व एवं श्री बीरबल आर्य के अथक प्रयास से यज्ञ, भजन, उपदेश, प्रवचन, सत्संग वेदप्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य रुप से श्री सुभाष आर्य एवं साथी, श्री शंकर आर्य एवं श्रीमती सुनीतादेवी, श्री सन्तोष आर्य एवं श्रीमती सरीता देवी, श्री मुकेश आर्य एवं श्रीमती अर्चना देवी, श्री राकेश आर्य एवं श्रीमती आशुदेवी उपस्थित रहे।

आर्यसमाज ढाप वि. खं. लैलूंगा जिला रायगढ़ में दिनांक २७ जून २०१४ को श्री डिग्रीलाल आर्य प्रधान, श्री जगनारायण आर्य एवं श्री बीरबल आर्य प्रचारक के अथक प्रयास से यज्ञ, प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर यजमान के के रुप में श्री मनुराज आर्य धर्म पत्नी श्रीमती इनमेत आर्या, पुत्र श्री विद्याधर आर्य रहे। कार्यक्रम में सत्य सनातन पवित्र वैदिक धर्म के १६ संस्कारों एवं पंच महायज्ञ के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में आशीष, घुरई बाई, रोहित, श्वेत कुमार, हीरालाल, घुनेश्वर, रनमेत सहित अधिक संख्या आर्यजन उपस्थित रहे।

आर्यसमाज रामनाथपुर जिला रायगढ़ में श्री जगबन्धु शास्त्री के ब्रह्मत्व एवं श्री बीरजल आर्य प्रचारक के सहयोग से दिनांक २९ जून २०१४ को श्री महेशराम आर्य के नाती (पोता) का मुण्डन संस्कार के उपलक्ष्य में यज्ञ, हवन किया गया। जिसमें जयराम आर्य, संदीप आर्य, गोवर्धन आर्य, चक्रधर आर्य, भीमदेव आर्य उपस्थित रहे।

संवाददाता : श्री बीरबल आर्य प्रचारक, रायगढ़

आर्यसमाज बिलासपुर का निर्वाचन सम्पन्न

बिलासपुर। आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर का निर्वाचन रविवार २७ जुलाई २०१४ को सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी, संरक्षक एवं अंतरंग सदस्य के सदस्य निर्विरोध चुने गए।

प्रधान – श्री ज्योतिर्मय आर्य, **उपप्रधान** – श्री गुरदास चावला, श्री सुधीर कुमार गुप्त, **मंत्री** – श्री सुदर्शन जायसवाल, **उपमंत्री**- श्री विनय कुमार गुप्त, श्री जितेन्द्र पटेल, **कोषाध्यक्ष** - श्री गोपालदास चावला, **पुस्तकाध्यक्ष**- श्री नन्द कुमार जायसवाल, **प्रचार मंत्री** – श्रीमती शालिनी गुप्त, श्री सत्यकाम गुप्त, **आर्यवीर दल अधिष्ठाता** - श्री एदलसिंह, श्री रघुनाथ सिंह, **संरक्षक** : श्रीमती निर्मला देवी गुप्त, श्री रामनारायण गुप्त, श्री रुपचन्द जीवनानी, श्री सुभाष बत्रा, **अंतरंग सदस्य** :- श्रीमती शैल गुप्त, श्री श्यामलाल गुप्त, श्री हरदास चावला, श्री वेदप्रकाश अग्रवाल, श्री रोशन जायसवाल, श्री पुष्कर जायसवाल, श्री शशिमाधव गुप्त, श्री सौरभ अनिल टिकेकर एवं श्री बसंत देवांगन।

निर्वाचन अधिकारी एवं आर्यसमाज के पुरोहित पंडित जयदेव शास्त्री ने सभी पदाधिकारियों, संरक्षकों एवं अंतरंग सदस्यों से निष्ठापूर्वक सत्य एवं धर्मानुसार आचरण कर दूसरों को प्रेरि करते हुए, वेदों के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया।

संवाददाता : सुदर्शन जायसवाल, मंत्री आर्यसमाज बिलासपुर

पं. रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ती पर भजन संध्या एवं सम्मान समारोह

नई दिल्ली । अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका द्वारा पं. रामप्रसाद बिस्मिल की जयन्ती के अवसर पर स्वस्ति महायज्ञ, विराट भजन संध्या एवं सम्मान समारोहँ का भव्य आयोजन आर्यसमाज बी-ब्लॉक, जनकपुरी में किया गया। इस समरोह के मुख्य अतिथि विधायक एवं दिल्ली सरकार के पूर्व वित्त मंत्री डॉ. जगदीश मुखी, दक्षिण दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री खुशीराम एवं मुख्य वक्ता साहित्य डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया थे। कार्यक्रम संयोजन अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। शास्त्री जी ने विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुये कहा कि पं. रामप्रसाद बिस्मिल भारत के महान क्रांतिकारी, अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी व उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादन, बहुभाषा-भाषी, इतिहासकार व साहित्यकार थे। उन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए अपने प्राम की आहुति दी।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि आर्यसमाज से जुड़कर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने देश भक्ति का पाठ पढ़ा और देश पर बलिदान हो गये। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। डॉ. जगदीश मुखी ने कहा कि जो जहां बैठा है वह वहां ईमानदारी से अपना काम करें, यही बिस्मिल के जीवन से सच्ची सीख होगी। सभी वक्ताओं ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के अभूतपूर्व त्याग, बलिदान एवं साहित्यिक योगदान को याद किया तथा उनके जीवन से देशभक्ति की भावना के अनुकरण एवं अध्यात्म पथ पर चलने की प्रेरणा दी। भजन सम्राट श्री भारतेन्दु मासूम ने पं. रामप्रसाद बिस्मिल के गीतों एवं भजनों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया।

इस समारोह में यशस्वी लेखक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित करते हुए प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह एवं शाल भेंट की। अध्यात्म रत्न सम्मान से सर्वश्री कन्हैयालाल आर्य, विजय गुप्त, चन्द्रकान्ता, अमर सिंह आर्य, विद्यासागर नांगिया को सम्मानित किया गया। खचाखच भरे सभागार में सर्वश्री यशपाल आर्य (चेयरमेन एवं निगम पार्षद), विद्यासागर वर्मा (पूर्व राजदूत कजाख्स्तान), सहिता जिन्दल (पूर्व निगम पार्षद), संजीव तोमर (कनाडा से पधारे), मेथ्यू श्रुहान (अमेरिका से पधारे), अरुण सहारन (उद्योगपति), प्रि. अरुण आर्य (अध्यक्ष कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट), वेद प्रकाश (प्रधान आर्यसमाज विकासपुरी), शिवकुमार मदान (उपप्रधान दि.आ.प्र. सभा), श्री अभय सिन्हा (महासचिव लोकनायक जयप्रकाश अध्ययन केन्द्र) एवं अनेक पत्रकार तथा विभिन्न संस्थाओं के अधिकारियों की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही।

सभी अभ्यागतों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने कहा कि संसार में अभिमानी व्यक्ति महान नहीं होते और महान व्यक्ति अभिमानी नहीं होते। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री भारतभूषण साहनी ने की। भव्य ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : सूर्यकान्त मिश्र, प्रबंध सम्पादक

आर्यसमाज सान्ताक्रुज वर्ष २०१४ के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती है।

(१) वेद-वेदांग पुरस्कार :- जिस विद्वान ने जीवनपर्यन्त वेद-वेदांगों पर अनुसंधान किया हो एवम् ग्रन्थ लिखे हो उन्हें **वेद-वेदांग पुरस्कार** से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि ३१००१/- रुपये दी जायेगी।

(२) वेदोपदेशक पुरस्कार :- जिस विद्वान ने जीवनपर्यन्त आर्यसमाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रुप में सेवा की हो उन्हें **वेदोपदेशक पुरस्कार** से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि २१००१/- रुपये दी जायेगी।

(३) श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार :- जिस विद्वान ने जीवनपर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्यसमाज की अधिकतम सेवा की हो। जिनक प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्यसमाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धान्त अथवा आर्य महापुरुषों के जीवन आदि से है। उन्हें **श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार** से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि २१००१/- रुपये दी जायेगी।

(४) श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार :- जिस विदुषी ने जीवनपर्यन्त आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया हो ऐसी महिला विदुषी/कार्यकर्त्री को रुपये १५००१/- रुपये की पुरस्कार राशि दी जायेगी।

(५) पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार :- ऐसे विद्वान् को रुपये १५००१/ की राशि से सम्मानित किया जायेगा जो आर्ष पाठ विधि से विद्याध्ययन करके स्नातक होकर कम से कम विगत १० वर्षों से किसी निजी या सरकारी शिक्षा संस्थाओं में सर्विन न करके आर्ष पाठ विधि के अध्ययन-अध्यापन के लिये गुरुकुल में या स्वतन्त्र रुप से संलग्न है, वह इस पुरस्कार के पात्र रहेंगे।

(६) श्रीमती कृष्णा गायत्री आर्य युवक पुरस्कार :- इस पुरस्कार से किसी ऐसे नवयुवक कार्यकर्ता को जिसने ऋषि दयानन्द के विचारों व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिये रचनात्मक कार्य किया हो उन्हें रुपये १५००१/- से सम्मानित किया जायेगा। नवयुवक की आयु ३० से ४५वर्ष के मध्य होनी चाहिए।

(७) श्री राजकुमार कोहली वरिष्ठ विद्वान पुरस्कार :- यह पुरस्कार ऐसे वयोवृद्ध विद्वान जिसने जीवन पर्यन्त वैदिक सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज के लिये अपना जीवन समर्पित किया है, उन्हें दिया जायेगा। इस पुरस्कार से वयोवृद्ध विद्वान/संन्यासी को रुपये १५००१/- रुपये राशि से सम्मानित किया जायेगा।

(८) श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार :- यह पुरस्कार ऐसी एक युवा महिला कार्यकर्ता को दिया जायेगा जिसने ऋषि दयानन्द के विचारों व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिये रचनात्मक कार्य किया हो। इस पुरस्कार से आर्य विचारधारा को बढ़ाने व वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार हेतु कार्यरत युवती को रुपये १५००१/- रुपये की राशि प्रदान की जायेगी।

(९) श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार :- ऐसा गुरुकुल जिसमें आर्य पाठ विधि से छात्र-छात्राओं को शिक्षा दी जाती हो। जिस गुरुकुल में कम से कम २५ छात्र-छात्राएं आवासीय शिक्षा ग्रहण करती हो। गुरुकुल को आर्यसमाज से अनुदान की आवश्यकता हो। जिस गुरुकुल में भवन निर्माम का कार्य चल रहा हो। गुरुकुल में साहित्य वृद्धि अथवा अन्न, वस्त्रादि के सहायता निमित। पुरस्कार राशि रुपये १५००१/- है।

(१०) श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल पुरस्कार :- ऐसा गुरुकुल जिसमें आर्य पाठ विधि से छात्र-छात्राओं को शिक्षा दी जाती हो। जिस गुरुकुल में कम से कम २५ छात्र-छात्राएं आवासीय शिक्षा ग्रहण करती हो। गुरुकुल को आर्यसमाज से अनुदान की आवश्यकता हो। जिस गुरुकुल में भवन निर्माम का कार्य चल रहा हो। गुरुकुल में साहित्य वृद्धि अथवा अन्न, वस्त्रादि के सहायता निमित। पुरस्कार राशि रुपये १५००१/- है।

(११) श्रीमती शिवराजवती आर्या बाल पुरस्कार :- इस पुरस्कार के लिये आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त कर रहे भारत वर्ष में सर्वप्रथम आये किन्ही दो (योग्यतम) छात्र-छात्राओं को रु. ८००१/- की पुरस्कार राशि दी जायेगी।

(१२) श्री हरभगवानदास गांधी मेधावी छात्र पुरस्कार :- यह पुरस्कार ऐसे छात्र को दिया जायेगा जो वेद विषय पर पीं.एच.डी. कर रहा हो या महर्षि दयानन्द सरस्वती से संबंधित विश्वविद्यालय में संस्कृत में प्रथम आया हो, उसे रुपये ८००१/- से पुरस्कृत किया जायेगा।

(१३) स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान पुरस्कार :- जिस युवा विद्वान ने जीवनपर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्यसमाज की सेवा करने का संकल्प लिया है। उन्हें **स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान पुरस्कार** से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि १५००१/- रुपये दी जायेगी।

(१४) स्व. नारायणदास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार :- जिस विद्वान ने जीवनपर्यन्त वेद के प्रचार हेतु अधिकतम सेवा की हो। उन्हें **स्व. नारायणदास हासानन्दानी विशिष्ट वेदांग पुरस्कार** से सम्मानित किया जायेगा। यह राशि २१००१/-रुपये दी जायेगी।

(१५) कैप्टन देवरत्न आर्य संगठनवीर पुरस्कार :- ऐसा जिस विद्वान ने जीवनपर्यन्त आर्यसमाज के संगठन के लिये अधिकतम सेवा की हो। उन्हें कैप्टन देवरत्न आर्य संगठनवीर पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि २५००१/- रुपये दी जायेगी।

इस अवसर पर पुरस्कृत सभी विद्वानों को पुरस्कार राशि के साथ शाल, श्रीफल, रजत ट्राफी तथा मोती माला से सम्मानित किया जायेगा।

जो विद्वान्/आर्य बन्धु किसी विद्वान का नाम उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वान के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रन्थों की सूची एवं प्रति सहित विस्तृत जानकारी दि. ३१-८-२०१४ तक भेजने की कृपा करें। आपके द्वारा प्रस्तावित नामों के आधार पर निर्णायक मण्डल वर्ष २०१४ के लिये उपरोक्त पुरस्कारों के लिये विद्वान का चयन करेगा। अन्तिम निर्णय का अधिकार आर्यसमाज सान्ताक्रुज (पं.) मुम्बई की अन्तरंग सभा के पास सुरक्षित होगा। आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती है।

विशेष :- दिनांक ३१-८-२०१४ तक प्रविष्टियां आर्यसमाज सान्ताक्रुज के कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए।

पता : आर्यसमाज सान्ताक्रुज, विट्ठलभाई पटेल मार्ग (लिकिंग रोड),
सान्ताक्रुज (प.) मुम्बई - ४०००५४, फोन : २६६०२८००/२२९३/१५१८

दिल्ली सभा द्वारा संस्कत प्रचार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम - आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक हरि नगर, नई दिल्ली के सहयोग से गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का संचालन

केवल और केवल संस्कृत के प्रचार प्रसार की दृष्टि से एवं संस्कृत के विद्वानों को तैयार करने के लिए यह लघु गुरुकुल कार्यरत है। इसमें केवल १० ब्रह्मचारियों को ही प्रवेश दिया गया है, जिसकी सम्पूर्ण दिनचर्या केवल संस्कृत को समर्पित है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार हरिनगर में संचालित यह संस्थान आचार्य धनञ्जय शास्त्री के आर्यात्व में कार्य कर रहा है। आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल एवं संस्कृत की उन्नति हेतु अपना आर्थिक सहयोग अवश्य दें। आप गुरुकुल को दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं भी प्रदान कर सकते है। आप अपना सहयोग **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम्** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट भेजकर कर सकते हैं। आप मासिक रुप से भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। **सभा को दिया गया दान आयकर की धारा ८०जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।**

- विनय आर्य, महामंत्री

योग–ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक १४ से २१ सितंबर २०१४ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जायेगे तथा दर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ भी होता है। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं, इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. ०९४१९१०७७८८, ०९४१९७९६९४९ अथवा ०९४१९१९८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।

– प्रधान भारतभूषण आनन्द, आश्रम उधमपुर (जम्मू)

आर्यसमाज रावतभाठा (कोटा) का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

कोटा। आर्यसमाज रावतभाठा कोटा राजस्थान का वार्षिक चुनाव दिनांक ६-७-२०१४ को सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए :-

१. श्री नरदेव आर्य - प्रधान
२. श्री शंकरदत्त शुक्ल - उपप्रधान
३. श्री योगेश आर्य - उपप्रधान
४. श्री ओमप्रकाश आर्य - मंत्री
५. श्री शैलेश कुमार - उपमंत्री
६. श्री भारत भूषण - उपमंत्री
७. श्री रमेशचन्द्र भाट - कोषाध्यक्ष
८. श्री अरविन्द श्रीवास्तव - पुस्तकाध्यक्ष
९. श्री विनोद कुमार त्यागी - आय-व्यय निरीक्षक
१०. श्री रेशमपाल सिंह - संरक्षक
११. श्री अशोक कुमार कश्यप, श्रीमती गायत्री देवी, श्रीमती मंजू कुमावत, श्रीमती प्रकाश धीमन, श्री पंकज कुमार अंतरंग सदस्य चुने गए।

संवाददाता : मंत्री आर्यसमाज रावतभाठा कोटा (राज.)

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

– दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८, श्रीनारायण कौशिक : ९७७०३६८६१३

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

A PANORAMIC VIEW OF KUALA LUMPUR

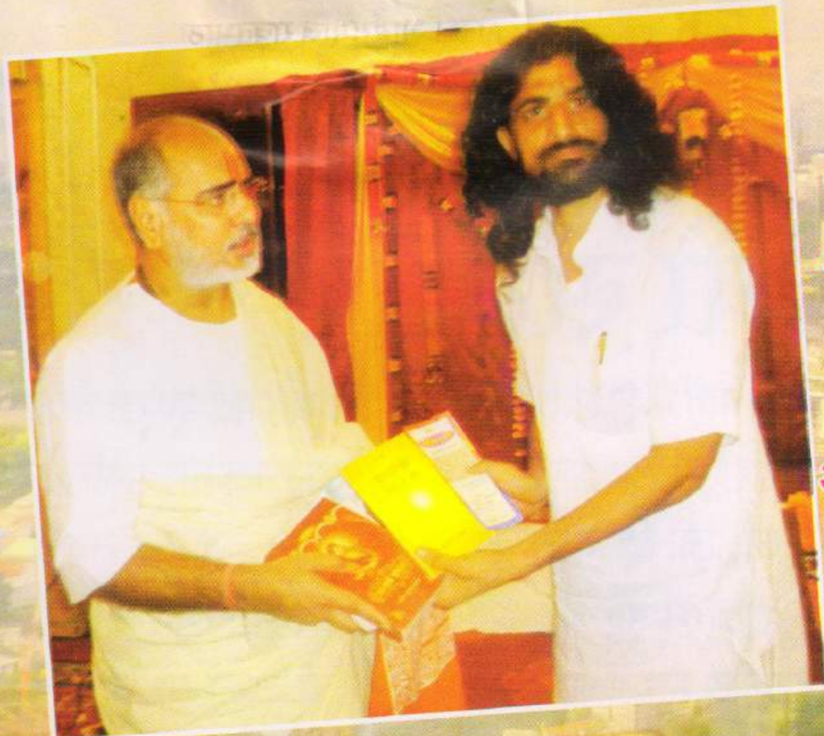

श्री रमेश भाई ओझा को सत्यार्थ प्रकाश व अन्य साहित्य भेंट करते हुए आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

इस्लामिक देश मलेशिया में आचार्य आनन्द पुरुषार्थी उद्बोधन देते हुए.

अगस्त 2014
CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग – 491001 (छ.ग.)

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्रीमान्

श्रावणी सन्देश

श्रावणी आर्यों का प्रसिद्ध पर्वों में से एक महान पर्व है। यह पर्व पूर्णतः वैदिक पर्व है। इसका सम्बन्ध भी वेदाध्ययन एवं अध्यापन से है। गृह्यसूत्रानुसार इसी दिन चातुर्मास्य का उपाकर्म किया जाता था, जो निरन्तर वर्षा के चार मास तक चलता था। इसी आधार को लक्ष्य कर आर्यसमाज में भी वेद सप्ताह की परम्परा आरम्भ हुई। आर्यसमाज के संस्थापक प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द का दृढ़ मन्तव्य था कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् समस्त संसार को श्रेष्ठ बनाओ। श्रेष्ठ आचरण के बिना श्रेष्ठता आयेगी कहां से ? इसका आवश्यक मार्गदर्शन वेद से प्राप्त होगा। इसलिए उन्होंने दुनियां के लोगों से कहा था - वेदों की ओर लौटो, वेदों में समस्त मानवीय समस्याओं का समाधान है, क्योंकि इस धरती पर वेद ही ऐसे ज्ञान के आगार ग्रंथ है जो हमें निर्भ्रान्त बनाते हैं। वैदिक ज्ञान उदात्त एवं निर्मल होने से सांसारिक विक्षोभ एवं वैमनस्य की दुर्भावना से त्राण प्रदान कर सकते हैं। अतः वेद हमारे धर्म का मूलाधार है। श्रावणी का यह पावन पर्व वेद प्रचार की प्रेरणा प्रदान करता है, वेदानुसार जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः आर्यों आइए, हम संकल्पबद्ध होकर वेद के पावन सन्देशों को जन-जन तक पहुंचाने का बीड़ा उठाए।

प्रधान **मंत्री** **कोषाध्यक्ष**

एवं समस्त पदाधिकारीगण, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिध सभा

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.